ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मासिक

मई-२०२४

मई-२०२४ ◇ वर्ष १३ ◇ अंक ०१ ◇ उदयपुर

जीवन संघार्षों की चक्की में,
बचपन बिलकुल नहीं पिसे।
विद्या पढ़ने का अवसर,
हर बच्चे को खूब मिले।
ऋषि कहते सत्यार्थ प्रकाश में,
हर बालक गुरुकुल में पले॥

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर–313001 (राज.)

₹१५ १५१

शुद्धता की कसौटी पर खरे।
MDH
मसाले
सेहत के रखवाले
असली मसाले सच - सच
महाशय राजीव गुलाटी
चेयरमैन, महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लि०
महाशय धर्मपाल गुलाटी
संस्थापक चेयरमैन, महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लि०
KITCHEN KING
किचन किंग
CHUNKY CHAT MASALA
चंकी चाट मसाला
DEGGI MIRCH
CHILLI POWDER
CHANA MASALA
चना मसाला
For More Information Visit us on :
mdhspicesofficial
mdhspicesofficial
mdhspicesofficial
SpicesMdh
www.mdhspices.com
SCAN FOR MDH ORIGINAL RECIPES

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ

डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमाँसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग (ग्राफिक्स डिजाईनर)

नवनीत आर्य (मो. 9314535379)

व्यवस्थापक

भँवर लाल गर्ग

सहयोग ◆	भारत	विदेश
संरक्षक	- 11000 रु.	$ 1250
आजीवन	- 1500 रु.	$ 300
पंचवर्षीय	- 600 रु.	$ 125
वार्षिक	- 150 रु.	$ 30
एक प्रति	- 15 रु.	$ 10

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच दिल्ली गेट, उदयपुर
खाता संख्या : 310102010041518
IFSC CODE- UBIN 0531014
MICR CODE- 313026001
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३१२५
वैशाख कृष्ण चतुर्दशी
विक्रम संवत्
२०८१
दयानन्दाब्द
२००

May - 2024

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नही है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर 2 व 3 (भीतरी आवरण) रंगीन 5000 रु.

अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	3000 रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	2000 रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	1000 रु.

०६

जानिये रामायण को

११

वेदों पर आक्षेप मूर्खता है

समाचार २९

०४	वेद सुधा
१०	सत्यार्थ मित्र बनें
१५	उत्तरराम चरित में परिवार के स्नेहसूत्र
१८	लकड़हारा और चन्दन-वन
२१	वीर सावरकर
२३	अनिवार्य है अभिवादन शीलता
२५	स्वास्थ्य- मधुमेह नियंत्रक अचूक नुस्खे
२७	कथा सरित- कहानी दयानन्द की

हलचल ३०

स्वामी श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - १३ अंक -०१

मुद्रण द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक
श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर (राजस्थान) 313001
(0294) 4017298, 09314535379, 7976271159
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा निदेशक– मुकेश चौधरी, चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर–313001 से प्रकाशित, सम्पादक–अशोक कुमार आर्य

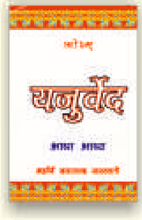

वेद सुधा

अपने आत्मा की आवाज सुनो

यदाकूतात्समसुस्त्रोद्धृदो वा मनसो वा सम्भृतं चक्षुषो वा।
तदनु प्रेत सुकृतामु लोकं यत्रऽऋषयो जग्मुः प्रथमजाः पुराणाः।। - यजुर्वेद १८/५८

यत् आकूतात् – जो संकल्पयुक्त, **हृदः वा** – हृदय से अथवा, **मनसः** – मन से, मनन से, **वा चक्षुषः**– अथवा आँख से, **सम्+असुस्त्रोत्**– भली प्रकार निकले, **वा** – अथवा (उपर्युक्त शक्तियों से), **सम्भूतम्** – अच्छी प्रकार धारण किया गया हो, **तत् अनु** – उसके अनुकूल, **प्र+इत** – उत्तम रीति से चलो, **सुकृताम् उ** – (इससे तुम) शुभ कर्म करने वालों की ही, **लोकम्** – अवस्था को (प्राप्त करोगे), **यत्र**–जहाँ, **प्रथमताः** – प्रधान, प्रथमोत्पन्न, **पुराणाः** – पुराने, **ऋषयः जग्मुः** – ऋषि गये हैं।

व्याख्या

साक्षात्कृतधर्माण ऋषयो बभूवुः। - नि. अ. १/२०

'जिन्होंने धर्म का = पदार्थों का अथवा पदार्थों के वास्तविक गुणादिक का साक्षात्कार= असन्दिग्ध ज्ञान प्राप्त कर लिया है, वे ऋषि कहलाते हैं।'

हमारे शास्त्रों में साक्षात्कार पर बहुत बल दे रक्खा रहा है। जैसाकि याज्ञवल्क्य ने अपनी पत्नी को कहा-

आत्मा वा अरे द्रष्टव्यः श्रोतव्यो मन्तव्यो निदिध्यासितव्यो मैत्रेयि।। -बृहदारण्यकोप. ४/५/६

अरे मैत्रेयि! आत्मा का साक्षात्कार करना चाहिए, उस साक्षात् के लिए, श्रवण, मनन तथा निदिध्यासन करना चाहिए। साक्षात्कार के बिना किसी वस्तु का यथार्थ कथन कोई कर ही नहीं सकता।

वेद में भी प्रश्न है-

को ददर्श प्रथमं जायमानमस्थन्वन्तं यदनस्था बिभर्ति। - ऋ. १/१६४/६

'जो हड्डी-रहित हड्डियों के ढाँचे को धारण कर रहा है, उस प्रथम उत्पन्न होने वाले {शरीर धारण करनेवाले} मुखिया का कौन साक्षात्कार करता है?'

दूसरे स्थान (ऋ. १०/१७७/३) में कहा-

अपश्यं गोपामनिपद्यमानम्।

'मैं अविनाशी आत्मा का साक्षात्कार करता हूँ।'

इस प्रकार वेद एवं वैदिक शास्त्र साक्षात्कार पर बहुत बल देते हैं।

यह सदा स्मरण रखना चाहिए कि साक्षात्कार के साधन- श्रवण, मनन तथा निदिध्यासन बताये गये हैं।

प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य है कि वह धर्म का साक्षात्कार करे, क्योंकि साक्षात्कार से मनुष्य उत्तम गति प्राप्त करना चाहते हैं। ऋषि जिस गति को प्राप्त करते है, वह **'सुकृताम् लोकः'** = सत्कर्म करनेवालों का लोक है।

वेद ने यहाँ एक सूक्ष्म संकेत किया है कि उत्तम गति की प्राप्ति के लिए ऋषित्व के साथ सुकृत भी होना चाहिए,

यर्थाथज्ञान के साथ उत्तम कर्म भी होना चाहिए। अकेले कर्म से या अकेले ज्ञान से उत्तम गति का मिलना असम्भव है, किन्तु सत्कर्म और यथार्थज्ञान प्राप्त कहाँ से हो? इसके समाधान में कहा जाता है-

धर्मं जिज्ञासमानानां प्रमाणं परमं श्रुतिः। - मनु. २/१३

'धर्म के जिज्ञासुओं के लिए श्रुति परम प्रमाण है।'

अच्छा, जिनकी श्रुति में गति न हो, वे क्या करें? धर्मशास्त्रकार स्मृति को उनका सहारा बताते हैं। कोई बोल पड़ता है-

श्रुतयो विभिन्नाः स्मृतयाऽपि भिन्नाः नैको मुनिर्यस्य वचः प्रमाणम्।

श्रुतियों में भेद है {कहीं ब्रह्मचर्य है, कहीं गृहस्थ का उपदेश है, कहीं अहिंसा का आदेश है, तो कहीं मारकाट का सन्देश है}, स्मृतियाँ भी एक जैसी बात नहीं कहतीं, अतः साधारण मनुष्य की बुद्धि में यही आता है कि किसी

ऋषि-मुनि की बात नहीं माननी चाहिए। तब किसकी बात मानें? उत्तर है-

'महाजना येन गतः स पन्थाः'।

महाजन (बड़े लोग) जिस मार्ग से जाएँ, वही मार्ग है, वही माननीय है।

किन्तु संसार में इस समय अनेक मत (पन्थ) हैं। प्रत्येक का महाजन अपना है। कोई अहिंसा का धर्म बतलाता है, कोई प्राणिघात को पुण्य बतलाता है। ऐसी अवस्था में किसकी बात मानें? ऐसी अवस्था में जो कुछ अपना हृदय कहे, वह मानना और करना चाहिए। मनुजी ने भी धर्म के चार लक्षण बताते हुए लिखा है-

श्रुतिः स्मृतिः सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः।

'श्रुति (वेद), स्मृति, सदाचार (श्रेष्ठ पुरुषों का आचार) और अपने मन को जो प्रिय लगे।'

मनु ने **'स्वस्य च प्रियमात्मनः'** लिखा है। वेद ने बहुत पहले इसको खोलकर कहा-

यदाकूतात्समसुस्त्रोद्धृदो वा मनसो वा सम्भृतं चक्षुषो वा।

'जिसके लिए संकल्प उठे, हृदय और मन साथ दें; आँख आदि ज्ञानेन्द्रियाँ भी उसकी सहायक हों।'

'स्वस्य च प्रियमात्मनः' अपने मन को जो प्रिय लगे। किसी के मन को दूसरे के प्राण लेना प्यारा लगता है। क्या वह वैसा कर ले? वेद ने जो कुछ कहा है, उससे प्रतीत होता है कि वेद को ऐसा अभिमत नहीं, क्योंकि वेद हृदय, मन और संकल्प इन सबकी अनुमति का आदेश कर रहा है। जब मन से पूछते हैं, क्या यदि तुम्हारी हत्या कर दी जाए, तो तुम्हें पसन्द होगा? इस पर मन में झिझक पैदा होती है। वेद के इस आशय को लेकर नीतिकार कहते हैं-

आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्।

'जो अपने को अप्रिय है, वह दूसरों के लिए भी न करे।'

अर्थात् अपनी आत्मा की आवाज अवश्य सुने और तदनुकूल करे भी, किन्तु विवेकपूर्वक।

संकलन कर्त्ता एवं भाष्यकार- वे. शा. स्वामी वेदानन्द तीर्थ
सम्पादक- स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती
साभार- स्वाध्याय-सन्दीप

आत्म निवेदन

जानिये रामायण को

क्या सीता का स्वयंवर हुआ ?
क्या पुष्प वाटिका में श्री राम और सीता ने एक दूसरे को पहले से देख लिया था ?
क्या सीता के स्वयंवर में रावण आया था ?

हमारा उत्तर तीनों का नकारात्मक है। वाल्मीकि रामायण में तीनों प्रश्नों का उत्तर **'नहीं'** में है।

वाल्मीकि रामायण में सीता स्वयंवर का कोई वर्णन नहीं है। उसके अनुसार एक बार राम व लक्ष्मण का ऋषि विश्वामित्र के साथ मिथिला में आगमन हुआ, जहाँ ऋषि विश्वामित्र ने ही राजा जनक से श्रीराम को वह शिवधनुष दिखाने को कहा। तब श्रीराम ने उस धनुष को उठा लिया और प्रत्यंचा चढ़ाते समय वह टूट गया। तब राजा जनक ने विश्वामित्र से अपनी पुत्री सीता का विवाह भगवान राम से करने का आग्रह किया, क्योंकि राजा जनक ने यह प्रण किया था कि जो भी इस शिव धनुष को उठा लेगा, उसी से वे अपनी पुत्री सीता का विवाह करेंगे। समय-समय पर कई राजा आए और प्रयास भी किया परन्तु वे सफल नहीं हुए।

इसी स्थल पर मानस में रावण और वाणासुर का भी उल्लेख है कि वे भी सीता को प्राप्त करने कि अभिलाषा से आये थे पर धनुष की चाप चढ़ाने में विफल रहने पर लौट गए। वाल्मीकि में इसका संकेत मात्र भी नहीं है। यहीं से स्वयंवर में रावण का आना और आकाशवाणी सुनके लौट जाना आदि प्रसंग कल्पित कर लिए गए हैं।

वाल्मीकि रामायण के अनुसार, सीता विवाह के दौरान लक्ष्मण और परशुराम का कोई विवाद नहीं हुआ था। वाल्मीकि रामायण के अनुसार सीता से विवाह के बाद जब श्रीराम अयोध्या लौट रहे थे, तब रास्ते में उन्हें श्री परशुराम जी मिले।

उन्हें आश्चर्य था कि शिव धनुष को कौन तोड़ सकता है अतः उन्होंने श्रीराम से अपने धनुष पर बाण चढ़ाने के लिए कहा। श्रीराम ने जब उनके धनुष पर बाण चढ़ा दिया, तो बिना किसी से विवाद किए वे वहाँ से चले गए।

कुल मिलाकर वाल्मीकि में न तो स्वयंवर नाम से राजा जनक द्वारा किये गए ऐसे किसी आयोजन का जिक्र है जिसमें भूमण्डल से आये अनेक रजा महाराजा उपस्थित थे, और राजाओं ने एक-एक करके शिव धनुष को तोड़ने का प्रयास किया परन्तु असफल रहे। तब श्री राम ने शिव धनुष तोड़ा और सीता ने जयमाला उनके गले में डाल दी। तब उसी सभा में परशुराम भी आ गए और उनका व लक्ष्मण का विख्यात संवाद हुआ। तुलसीदास जी के 'मानस' में यह सब तो है साथ में यह भी वर्णन है कि गौर पूजन के लिए गयी सीताजी और गुरु के लिए

पुष्प तोड़ने गए श्री राम एक दूसरे को देखने में समर्थ हुए और दोनों के हृदय में प्रेम भी अंकुरित हो गया। वाल्मीकि रामायण में इस घटना का संकेत भी नही है। अस्तु।

अब हम वाल्मीकि रामायण के उन प्रसंगों को संक्षेप में पाठकों के समक्ष रखते हैं जो इस घटना से सम्बन्धित हैं।

जब श्री राम लक्षमण द्वारा रक्षित विश्वामित्र जी का यज्ञ सम्पन्न हो गया तथा अनेक विद्याएँ राजकुमारों ने सीख लीं तब गुरु विश्वामित्र राम लक्षमण से मिथिला चलने की बात कहते हैं।

मैथिलस्य नरश्रेष्ठ जनकस्य भविष्यति।
यज्ञः परमधर्मिष्टस्तस्य यास्यामहे वयम्।। - १/३१/६

विश्वामित्र श्री राम से कहते हैं कि राजा जनक के यहाँ यज्ञ होने जा रहा है हम उस यज्ञ में चलेंगे। पाठक देख सकते हैं कि यहाँ केवल यज्ञ की चर्चा है सीता स्वयंवर का संकेत भी नहीं है। इसमें भी आकर्षण क्या है वह बताते हुए अद्भुत धनुष की बात भी कहते हैं-

त्वं चैव नरशार्दूल सहास्माभिर्गमिष्यसि।
अद्भुतं धनुरत्नं च तत्र तद्रष्टुमर्हसि।। - १/३१/७

उस अद्भुत धनुष रत्न जो कि देखने योग्य है को देखने हम वहाँ जायेंगे अर्थात् जाने का उद्देश्य वह धनुष है न कि सीता स्वयंवर।

जब ऋषि विश्वामित्र जनकपुरी पहुँच जाते हैं तो उनका सत्कार यथायोग्य किया जाता है-

प्रतिगृह्य च तां पूजां जनकस्य महात्मनः।। - १/५०/८
पप्रच्छ कुशलं राज्ञो यज्ञस्य च निरामयम्।

महात्मा राजा जनक की वह पूजा ग्रहण करके मुनि ने उनका कुशल समाचार पूछा तथा उनके यज्ञ की निर्बाध स्थिति के विषय में जिज्ञासा की। यहाँ भी स्वयंवर का संकेत तक नहीं है अन्यथा जब कोई आयोजन विशेष हो रहा हो तो व्यक्ति उसके बारे में जानकारी प्राप्त करता है, चर्चा करता है।

अद्य यज्ञसमृध्दिर्मे सफला दैवतैः कृता।। - १/५०/१३-१४
अद्य यज्ञफलं प्राप्तं भगवद्दर्शनान्मया।

तत्पश्चात् राजा जनक ने विश्वामित्र जी की ओर देखकर कहा- भगवन आज देवताओं ने मेरे यज्ञ की आयोजन सफल कर दी। आज पूज्य चरणों के दर्शन से मैंने यज्ञ का फल पा लिया।

द्वादशाहं तु ब्रह्मर्षे शेषमाहुर्मनीषिणः।। - १/५०/५
ततो भागार्थिनो देवान् द्रष्टुमर्हसि कौशिक।

मेरी यज्ञ दीक्षा के बारह दिन ही शेष हैं अतः कुशिक नन्दन बारह दिनों बाद यहाँ भाग ग्रहण करने के लिए आये हुए देवताओं का दर्शन कीजिएगा।

यहाँ स्पष्ट है कि राजा जनक के यहाँ एक यज्ञ आयोजित था जिसका सीता के विवाह से कोई सम्बन्ध नही था। विश्वामित्र मुनि भी दशरथ पुत्रों का परिचय देते हुए यही कहते हैं कि वे लोग धनुष देखने आये हैं।

पुत्रौ दशरथस्येमौ क्षत्रियौ लोकविश्रुतौ।
द्रष्टुकामौ धनुश्श्रेष्ठं यदेतत्वयि तिष्ठति।। - १/६६/५

पुनः धनुष दर्शन अभीष्ट बताते हुए कहते हैं कि महाराज राजा दशरथ के ये दोनों पुत्र विश्वविख्यात क्षत्रिय वीर हैं और आपके यहाँ यह जो श्रेष्ठ धनुष रखा है उसे देखने की इच्छा रखते हैं।

एतद्दर्शय भद्रं ते कृतकामौ नृपात्मजौ।
दर्शनादस्य धनुषो यथेष्टं प्रतियास्यतः।। - १/६६/६

इसीलिए आगे कहते हैं- आपका कल्याण हो। वह धनुष इन्हें दिखा दीजिये इससे इनकी इच्छा पूरी हो जायेगी फिर ये राजकुमार सन्तुष्ट होकर अपनी राजधानी लौट जायेंगे। पाठकगण स्वयं विश्लेषण करें यहाँ राम-सीता के विवाह का कोई उल्लेख नहीं है, संकेत भी नहीं है।

इदं धनुर्वरं ब्रह्मन् संस्पृशामीह पाणिना।
यत्नवांश्च भविष्यामि तोलने पूरणेऽपि वा॥ - १/६७/१४

आगे विश्वामित्र की आज्ञा से श्रीराम कहते हैं- अच्छा अब मैं इस दिव्य तथा श्रेष्ठ धनुष में हाथ लगाता हूँ मैं इसे उठाने और चढ़ाने का भी प्रयत्न करूँगा। पाठक स्मरण रखें कि अभी तक भी सीता के वीर्य शुल्का होने की बात नहीं आयी।

जब धनुष टूट जाता है तब जनक सीता के वीर्य शुल्का होने की प्रतिज्ञा के बारे में बताते हैं और सीता का विवाह राम से करने की बात आती है। वे कहते हैं-

मम सत्या प्रतिज्ञा च वीर्यशुल्केति कौशिक।
सीता प्राणैर्बहुमता देया रामाय मे सुता॥ - १/६७/२३

कुशिक नन्दन मैंने सीता को वीर्य शुल्का बताकर जो प्रतिज्ञा की थी वह आज सत्य एवं सफल हो गयी। सीता मेरे लिए प्राणों से भी बढ़कर है अपनी यह पुत्री मैं श्री राम को समर्पित करूँगा।

अब जब राम-सीता के विवाह के बारे में निश्चय हुआ तो महाराज दशरथ को बुलाना स्वाभाविक और आवश्यक था। ऐसा किया गया। महाराज दशरथ को सम्बोधित करते हुए जनक कहते हैं-

पूर्वं प्रतिज्ञा विदिता वीर्यशुल्का ममात्मजा।
राजानश्च कृतामर्षानिर्वीर्या विमुखीकृताः॥ - १/६८/७

राजन आपको मेरी पहले की हुयी प्रतिज्ञा का हाल मालूम होगा। मैंने अपनी पुत्री के विवाह के लिए पराक्रम का ही शुल्क नियत किया था। उसे सुनकर कितने ही राजा अमर्ष में भरे हुए आये।

सेयं मम सुता राजन् विश्वामित्रपुरस्सरैः।
यदृच्छयागतैर्वीरैर्निर्जिता तव पुत्रकैः॥ - १/६८/८

नरेश्वर मेरी इस कन्या को विश्वामित्र जी के साथ अकस्मात् घूमते-फिरते आये हुए आपके पुत्र श्री राम ने अपने पराक्रम से जीत लिया है। यहाँ राम-लक्षमण के अकस्मात् घूमते-फिरते आने कि बात पर पाठक ध्यान देवें। स्पष्ट है वाल्मीकि रामायण में स्वयंवर आयोजन की कथा नहीं है।

अब तुलसीदास जी के रामचरित मानस की बात करते हैं, प्रारम्भ में वहाँ भी केवल धनुष यज्ञ की कथा है, स्वयंवर की नहीं परन्तु बाद में स्पष्ट रूप से स्वयंवर आयोजन उसमें उपस्थित अनेकों राजाओं तथा धनुष तोड़ने में उनकी विफलता के फलस्वरूप राजा जनक की खिन्नता तदनन्तर श्रीराम द्वारा धनुष भंग सभी घटनाएँ विस्तार से दी हैं। देखिये -

तब मुनि सादर कहा बुझाई। चरित एक प्रभु देखिअ जाई॥
धनुषजग्य मुनि रघुकुल नाथा। हरषि चले मुनिबर के साथा॥

तब मुनिराज ने आदर सहित श्रीराम-लक्ष्मण को बुलाकर कहा कि तुम एक सुन्दर दृश्य देखने हमारे साथ चलो। तब धनुष यज्ञ का समाचार सुन श्रीराम-लक्ष्मण श्री विश्वामित्र के साथ सहर्ष चल दिए। यहाँ भी स्वयंवर की बात नहीं है धनुष यज्ञ की ही बात है, परन्तु आगे सीता स्वयंवर भी है, पुष्प वाटिका भी है।

सीय स्वयंबरु देखिअ जाई। ईसु काहि धौं देइ बड़ाई॥
लखन कहा जस भाजनु सोई। नाथ कृपा तव जापर होई॥

चलें अब सीता के स्वयंवर में जाकर देखें कि प्रभु किसे बड़ाई देता है......

यहाँ सीता स्वयंवर की स्पष्ट चर्चा की गयी है।

स्वयंवर के सन्दर्भ में आवश्यक है कि महाराज जनक ने अनेक अन्य राजाओं को भी सीता स्वयंवर के निमित्त आमंत्रित किया हो। अन्य राजाओं की उपस्थिति ही उस आयोजन को स्वयंवर बनाती है-

राज समाज बिराजत रूरे। उडगन महुँ जनु जुग बिधु पूरे।। - बाल काण्ड २४१/२

(श्री राम और लक्ष्मण के बारे में गोस्वामी तुलसी दास जी लिखते हैं)- वे राजाओं के समाज में ऐसे सुशोभित हो रहे हैं मानो तारागणों के बीच दो पूर्ण चन्द्रमा हों। यहाँ अन्य राजाओं की उपस्थिति का स्पष्ट उल्लेख है जबकि वाल्मीकि रामायण में इस अवसर पर अन्य किसी राजा की चर्चा भी नहीं है।

अब इन्हीं राजाओं के मध्य राजा जनक सीता के वीर्य शुल्का होने और धनुष भंग की प्रतिज्ञा की घोषणा करते हैं, जिसे सुनकर स्वयंवर में आये राजाओं के मध्य आकुलता बढ़ जाती है।

सुनि पन सकल भूप अभिलाषे। भटमानी अतिसय मन माखे।।
परिकर बाँधि उठे अकुलाई। चले इष्टदेवन्ह सिर नाई।। - बालकाण्ड २५०/३

प्रण सुनकर सब राजा ललचा उठे। जो वीरता के अभिमानी थे, वे मन में बहुत ही तमतमाए। कमर कसकर अकुलाकर उठे और अपने इष्टदेवों को सिर नवाकर चले।

स्थिति यह आ जाती है कि किसी भी राजा से धनुष उठाया तक भी नहीं गया तो अनेकों ने मिलकर उस धनुष को उठाने का प्रयत्न किया परन्तु तब भी सफल नहीं हुए।

भूप सहस दस एकहि बारा। लगे उठावन टरइ न टारा।। - बालकाण्ड २५१/१

'दस हजार राजा एक साथ ही उस धनुष (शिव-धनुष) को उठाने लगे, पर वह तनिक भी अपनी जगह से नहीं हिला।

दीप दीप के भूपति नाना। आए सुनि हम जो पनु ठाना।। - बालकाण्ड २५१/४

जब कोई भी राजा सफल नहीं हुआ तब अत्यन्त विषाद ग्रस्त हो राजा जनक अपनी निराशा प्रकट करते हैं। मैंने जो प्रण किया उसे सुनकर द्वीप-द्वीप के राजा यहाँ आये। वे आगे कहते हैं-

अब जनि कोउ भाखे भट मानी। बीर बिहीन मही मैं जानी।
तजहु आस निज निज गृह जाहू। लिखा न बिधि बैदेहि बिबाहू।। - बालकाण्ड २५२/ २

अब कोई वीरता का अभिमानी नाराज न हो। मैंने जान लिया, पृथ्वी वीरों से खाली हो गई। अब आशा छोड़कर अपने-अपने घर जाओ, ब्रह्मा ने सीता का विवाह लिखा ही नहीं।

इस सब के उपरान्त गुरु की आज्ञा प्राप्त कर श्रीराम धनुष भंग करने आगे बढ़ते हैं।

लेत चढ़ावत खैंचत गाढ़ें। काहुँ न लखा देख सबु ठाढ़ें।
तेहि छन राम मध्य धनु तोरा। भरे भुवन धुनि घोर कठोरा।।
- बालकाण्ड २६१/४

लेते, चढ़ाते और जोर से खींचते हुए किसी ने नहीं लखा (अर्थात् ये तीनों काम इतनी फुर्ती से हुए कि धनुष को कब उठाया, कब चढ़ाया और कब खींचा, इसका किसी को पता नहीं लगा), सबने श्रीराम जी को (धनुष खींचे) खड़े देखा। उसी क्षण श्री रामजी ने धनुष को बीच से तोड़ डाला। भयंकर कठोर ध्वनि से (सब) लोक

भर गए।

अतः स्पष्ट है कि राम द्वारा धनुष भंग के अवसर पर अनेक राजाओं की उपस्थिति वाल्मीकि रामायण में नहीं है, पर तुलसी के मानस में है। साथ ही अनेक अन्य राम गाथाओं में भी इनकी उपस्थिति है।

रामायण के वरिष्ठ अधेता फादर कामिल बुल्के के अनुसार- परवर्ती रचनाओं में राम प्रायः अन्य राजाओं की उपस्थिति में अर्थात् सीता स्वयंवर के अवसर पर धनुष चढाते हैं। उदाहरणार्थ नृसिंह पुराण (अध्याय ४७), भागवत पुराण (६, १०), अध्यात्म रामायण (१, ६, २४) कंब रामायण (१, १२).... जबकि वाल्मीकि रामायण में ऐसा नहीं है।

एक लम्बे कालखण्ड के मध्य एतिहासिक वृतान्त में परिवर्तन/परिवर्धन/प्रक्षेप होते रहे हैं, रामायण भी इसका अपवाद नहीं है। अतः इतिहास की दृष्टि से वाल्मीकि रामायण ही अपेक्षाकृत प्रामाणिक है इसमे सन्देह नहीं। इस शृंखला में उन पाठकों तक जिनकी जानकारी का स्रोत मात्र टी.वी. धारावाहिक हैं हम तथ्यात्मक जानकारी देने का प्रयास कर रहे हैं।

- अशोक आर्य
सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

सत्यार्थ मित्र बनें

न्यास के कार्यो को गति प्रदान करने के लिए 5100 रु. (पाँच हजार एक सौ) वार्षिक का सहयोग प्रदान करें।

आपका मात्र ५१०० रुपये वार्षिक का सहयोग न्यास के कार्य को अद्वितीय गति प्रदान कर सकता है।

हमारे अत्यन्त आत्मीय बन्धुजन!

इस अपील को मेरी व्यक्तिगत अपील कहिए अथवा न्यास की अपील समझिए। यह आप तक पहुँचे और आपकी आत्मीयता हमें प्राप्त हो, इसी नाते हम प्रथम बार अर्थ सहयोग का निवेदन कर रहे हैं।

आपको यह जानकारी होगी ही कि नवीन, आकर्षक प्रकल्पों का निर्माण कर न्यास सहस्रों लोगों तक वैदिक संस्कृति के मूल तत्त्वों को अग्रप्रसारित कर रहा है।सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर द्वारा आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा में वेद, वेद के प्रादुर्भाव, भारतीय ऋषियों के योगदान, योगिराज श्री कृष्ण और भगवान राम के पावन जीवन–चरित्र, मेवाड़ की माटी के गौरव महाराणा प्रताप, आर्यसमाज के रत्नों, भारत को स्वतन्त्रता दिलाने वाले क्रान्तिकारियों, सत्यार्थ प्रकाश चित्रावली एवं महर्षि दयानन्द के जीवन चरित्र के माध्यम से व संस्कार वीथिका के माध्यम से मानव निर्माण की पूरी योजना आगन्तुकों के सामने रखी जा रही है।इस क्रम में मानों महर्षिवर की संस्कार विधि मूर्तरूप में चित्रित हो गयी है।

वहीं उच्चतम गुणवत्ता के 3D थियेटर का निर्माण कर महापुरुषों के जीवन–चरित्र का दिग्दर्शन भी कराया जा रहा है। यहाँ यह अंकित करना आवश्यक है कि मुक्त हस्त से दिए हुए उदार अर्थ के सहयोग से भव्य संस्कार वीथिका परिसर व थियेटर का निर्माण माननीय सुरेश चन्द्र जी आर्य; अहमदाबाद और माननीय दीनदयाल जी गुप्त; कोलकाता के पवित्र सहयोग से हो पाया है एवं संस्कारों का निर्माण आर्यजनों के सामूहिक सहयोग से एकत्रित धन से हुआ है। परन्तु इनको गति देने के लिए, वर्ष में सारे प्रकल्प 365 दिन गतिशील रहें, इसके लिए आवश्यक है कि कुछ लोग आगे आएँ और प्रतिवर्ष अपना योगदान दें, इसीलिए आपसे यह निवेदन कर रहा हूँ। **मैं व्यक्तिगत रूप से अनुगृहीत होऊँगा अगर आप मात्र 5100 सौ रुपये प्रतिवर्ष देने का संकल्प लेंगे।** न्यास का एकाउन्ट नम्बर भी नीचे अंकित है। न्यास को प्रदत्त दान आयकर अधिनियम की धारा 80G के अन्तर्गत कर मुक्त है।

हमें आशा ही नहीं विश्वास है कि आप हमारी प्रार्थना को स्वीकार कर 5100 रुपये वार्षिक का यह अर्थ सहयोग प्रदान करने की कृपा करेंगे। **निश्चित मानिये आपके सहयोग से जो ऊर्जा और गति हमें मिलेगी वह लाखों लोगों तक वैदिक संस्कृति के उदात्त मूल्यों को सम्प्रेषित करने में मील का पत्थर साबित होगी।**

निवेदक- अशोक आर्य, अध्यक्ष-न्यास

चैक श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, मेन ब्रांच, दिल्ली गेट, उदयपुर बैंक एकाउन्ट का विवरण : AC. No. : 310102010041518, IFSC CODE- UBIN 0531014, MICR CODE- 313026001 में जमा करा कृपया सूचित करें।

वेदों पर आक्षेप मूर्खता है

[वेदों पर किए प्रत्येक आक्षेप का उत्तर–आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक द्वारा]

वेदों को अपौरुषेय मानने वालों में भी वेद में क्या है इस बात से अनभिज्ञता है। इसका दुष्परिणाम यह निकला कि ऋषि परम्परा से पृथक लोगों ने वेदों को मानव रचित मानते हुए ऐसे अर्थ किये जिनसे वेदों की अवमानना हुयी। आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने न सिर्फ इस समस्या को समझा बल्कि इसे ही भारत की हर न्यूनता का मूल कारण माना। उनके अनुसार वेदों की शिक्षा का ज्ञान न होने के कारण प्रमाद के चलते जिस गति से मानव जीवन उन शिक्षाओं से दूर होता गया उसी गति से वह कुरीतियों में आबद्ध होता गया।

प्रथम आक्षेप की समीक्षा

सर्वप्रथम हम वेदों पर उठाये गये आक्षेपों का उत्तर दे रहे हैं। उसमें भी सबसे अधिक प्रक्षेप 'वेद का भेद' साइट पर सुलेमान रजवी ने किये हैं। रजवी वेदों पर हिंसा एवं साम्प्रदायिकता का आरोप लगाते हुए लिखते हैं–

आक्षेप संख्या१- Vedas are **terror manual** which turns humans into savages. **Many tribes were destroyed as a result of the violent passages in Vedas.** As per Vedas, you must kill a person who rejects Vedas. who hates Vedas and Ishwar, who does not worship, who does not make offerings to Ishwar. who insults god [Blasphemy], one who oppresses a Brahmin etc. There are several passages in Vedas which calls for death of disbelievers.

अर्थात् इनकी दृष्टि में वेद मनुष्य को बर्बर आतंकी बनाने वाला ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ ने अनेक जनजातियों को नष्ट कर दिया है। वेद और ईश्वर को न मानने वाले, ईश्वर की पूजा न करने वाले, ईश्वर की निन्दा करने वाले और ब्राह्मण का अपमान करने वाले को मार डालने का आदेश वेद में दिया गया है।

इसके साथ ही रजवी का कहना है कि वेदों को मानने वाले वेदों में निर्दिष्ट हिंसा को नहीं देखते, बल्कि अन्य सम्प्रदायों के ग्रन्थों का गलत अर्थ करके उन पर हिंसा का आरोप लगाते हैं।

आक्षेप की समीक्षा- मैं रजवी के साथ सभी इस्लामी विद्वानों से पूछना चाहूँगा कि मक्का-मदीना से प्रारम्भ हुआ इस्लाम क्या शान्ति और सत्य के द्वारा विश्व के ५६-५७ देशों में फैला है? क्या तैमूर, अलाउद्दीन खिलजी, बाबर, अकबर और औरंगजेब जैसे लोग इस्लाम के शान्तिदूत बनकर भारत में आए

थे? क्या इन शान्तिदूतों की शान्ति से आहत होकर हजारों रानियों ने जौहर करके अपने प्राण गँवाए थे? क्या उन्होंने भारत में शान्ति की स्थापना के लिए हजारों मन्दिर तोड़े थे? क्या कुरान में काफिरों की गर्दनें उड़ाने का वर्णन नहीं है? आप वेदानुयायियों के द्वारा वनवासियों, जिन्हें षड्यन्त्रपूर्वक आदिवासी कहा गया है, की हत्या का आरोप लगा रहे हैं। आपको इतनी समझ तो रखनी चाहिए कि भारत में

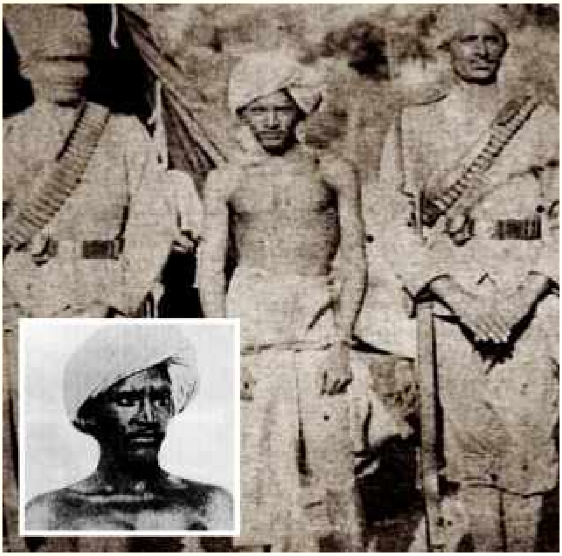

आज भी वनवासी वर्ग अपनी परम्परा व मान्यताओं को प्रसन्नतापूर्वक निभा रहा है और इस्लामी देशों में सभी को बलपूर्वक या तो इस्लामी मान्यताओं को मानने के लिए विवश किया गया है अथवा उन्हें नष्ट कर दिया गया है। भारत में तो सम्पूर्ण वनवासी समाज क्षत्रियों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर राष्ट्र की रक्षा के लिए अपना बलिदान देता चला आया है, चाहे इस्लामी आक्रान्ताओं के विरुद्ध युद्ध हो अथवा अंग्रेजों के विरुद्ध। वनवासियों ने राष्ट्र व धर्म की रक्षा के लिए सदैव अपना बलिदान दिया है। इसलिए आपको अपने घर की चिन्ता करनी चाहिए, हमारे घर की नहीं। अगर वेदानुयायी समाज हिंसक होता, तो संसार में कोई दूसरा सम्प्रदाय पैदा ही नहीं होता और यदि पैदा हो जाता, तो वह जीवित भी नहीं रहता।

आप कुरान पर किये गये किसी आक्षेप को नासमझी का परिणाम बता रहे हैं, तो कृपया समझदारी का परिचय देकर क्या आप कुरान के उन अनुवादों को नष्ट करवा कर उनके सही अनुवाद कराने का साहस करेंगे? छह दिन में सम्पूर्ण सृष्टि का बन जाना, मिट्टी से मानव का शरीर बन जाना, खुदा का तख्त पर बैठे रहना एवं अन्य सृष्टि सम्बन्धी आयतों की सही व्याख्या करके सम्पूर्ण सृष्टि प्रक्रिया को मुझे समझाने का प्रयास करेंगे? मैं निश्चित रूप से कह सकता हूँ कि कोई भी इस्लामी विद्वान् इसमें समर्थ नहीं हो सकता।

आपने वेद को तो सही ढंग से समझ ही लिया होगा, तभी तो आरोप लगा रहे हैं। यदि आप वेद समझते हैं, तब तो आपको किसी के भाष्य उद्धृत करने की आवश्यकता ही नहीं थी। यहाँ ऐसा प्रतीत होता है कि आपका मुख्य लक्ष्य आर्यसमाज एवं पौराणिक (कथित सनातनी हिन्दु) को ही बदनाम करना है। आपको संस्कृत भाषा का कोई ज्ञान नहीं है, अन्यथा आप आचार्य सायण का भाष्य भी उद्धृत करते। आपने श्री देवीचन्द को भी आर्य विद्वान् कहा है, यह ज्ञान क्या आपको खुदा ने दिया है कि देवीचन्द आर्यसमाज के विद्वान् थे? मैंने तो आर्य समाज में किसी देवीचन्द नामक वेदभाष्यकार का नाम तक नहीं सुना। भाष्यों में भी प्रायः आपने अंग्रेजी अनुवादों को ही अधिक उद्धृत किया है। इससे यह भी सिद्ध होता है कि आपको हिन्दी भाषा का भी बहुत अधिक ज्ञान नहीं है और केवल अंग्रेजी भाषा पढ़कर वेद के अधिकारी विद्वान् बनकर वेद पर आक्षेप करने बैठ गये। मैं मानता हूँ कि ऋषि दयानन्द के अतिरिक्त अन्य सभी भाष्यकारों से वेदभाष्य करने में भारी भूलें हुई हैं। अब हम क्रमशः आपके द्वारा उद्धृत एक-एक वेद मन्त्र पर विचार करते हैं-

अपघ्नन्तो अराव्णः पवमानाः स्वर्दृशः।
योनावृतस्य सीदत॥ – ऋग्वेद ९/१३/९

इस मन्त्र का आपने निम्नानुसार भाष्य उद्धृत किया है-

"May you (O love divine), the beholder

of the path of enlightenment, purifying our mind and destroying the infidels who refuse to offer worship, come and stay in the prime position of the eternal sacrifice." **-Tr. Satya Prakash Saraswati**

अर्थात् आप (हे ईश्वरीय प्रेम), आत्मज्ञान के मार्ग के द्रष्टा, हमारे मन को शुद्ध करने वाले और पूजा करने से इनकार करने वाले नास्तिकों को नष्ट करने वाले, आओ और शाश्वत यज्ञ के प्रधान पद पर रहो।

(अराव्णः) दुष्टों को **(अपघ्नन्तः)** दारुण दण्ड देने वाला **(पवमानाः)** सत्कर्मियों को पवित्र करने वाला **(स्वर्दृशः)** सर्वद्रष्टा परमात्मा **(ऋतस्य)** सत्कर्मरूपी यज्ञ की **(योनौ)** वेदी में **(सीदत)** आकर विराजमान हो।

यहाँ अंग्रेजी अनुवाद को स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती का बताया गया है। निश्चित ही यह अनुवाद उचित नहीं है, परन्तु हिन्दी अनुवाद किसका है, यह आपने नहीं दर्शाया है। इसे हम बता रहे हैं कि यह आर्य विद्वान् आचार्य बैद्यनाथ शास्त्री के द्वारा किया हुआ अनुवाद है। इस हिन्दी अनुवाद पर आपको क्या आपत्ति है? अथवा संसार का कोई सभ्य अथवा न्यायप्रिय व्यक्ति इस पर क्या आपत्ति कर सकता है? क्या दुष्ट को दण्ड देना अपराध है? यदि ऐसा है, तो संसार के सभी न्यायालय और पुलिस व्यवस्था व सेना को बन्द वा समाप्त कर देना चाहिए। मैं इस मन्त्र पर आपके आक्षेप को समझ नहीं पा रहा। क्या आप दुष्ट को पुरस्कृत और सत्कर्म करने वाले को दण्डित वा अपवित्र करना चाहते हैं? जैसाकि संसार में खूनी मजहबों का इतिहास व चरित्र रहा है। यद्यपि यह हिन्दी भाष्य गलत नहीं है, परन्तु यह कथमपि पर्याप्त भी नहीं है। अब हम इस मन्त्र पर अपने ढंग से विचार करते हैं-

इस मन्त्र का ऋषि असित काश्यप देवल है। इसका अर्थ यह है कि यह मन्त्ररूपी छन्द रश्मि कूर्म प्राण राशिमयों से उत्पन्न ऐसी सूक्ष्म प्राण रश्मियों, जो स्वयं किसी के बन्धन में नहीं आतीं, परन्तु सूक्ष्म कणों और रश्मियों को अपने साथ बाँधने में समर्थ होती हैं, से होती है। इसका देवता पवमान सोम और छन्द यवमध्या गायत्री है। इस कारण इसके दैवत और छान्दस प्रभाव से इस सृष्टि में विद्यमान सोम पदार्थ श्वेतवर्णीय तेज से युक्त होने लगता है। इसके साथ ही इस सृष्टि में विद्युत् चुम्बकीय बल भी समृद्ध होने लगता है। अब हम इसका तीन प्रकार का भाष्य करते हैं-

१. आधिदैविक भाष्य- **(पवमानाः, स्वर्दृशः)** सूर्य के समान तेजस्वी और शुद्ध सोम पदार्थ **(अराव्णः, अपघ्नन्तः)** **{अराव्णः=रा दाने (अदा.) धातोर्वनिप्। नञ्समासः}** संयोग-वियोग की प्रक्रिया में बाधा डालने वाले अथवा उस प्रक्रिया में भाग लेने में असमर्थ पदार्थों को नष्ट करता अथवा उन्हें हटाता हुआ **(ऋतस्य, योनौ, सीदत)** **{ऋतम्=ऋतमित्येष (सूर्यः) वै सत्यम्** (ऐ.४/२०), **ऋतमेवपरमेष्ठी** (तै.ब्रा. १/५/५/१), **अग्निर्वा ऋतम्** (तै.ब्रा.२.१.११.१)**}** सूर्यलोक के सर्वोत्तम आग्नेय क्षेत्र अर्थात् केन्द्रीय भाग अथवा सम्पूर्ण सूर्यलोक के उत्पत्ति और निवास स्थान में विद्यमान रहता है।

भावार्थ- सूर्यलोक की उत्पत्ति होने से पहले विशाल खगोलीय मेघों के अन्दर सोम रश्मियाँ शुद्ध रूप में व्याप्त होती हैं। जब वे सोम रश्मियाँ तप्त होने लगती हैं, तब वे ऐसे पदार्थ जो, स्वयं सूर्यलोक के निर्माण की प्रक्रिया में भाग लेने के लिए संयोग-वियोग आदि प्रक्रियाओं में भाग लेने योग्य नहीं होते हैं अथवा जो संयोग-वियोग प्रक्रियाओं में बाधा डाल रहे होते हैं, उन्हें नष्ट वा दूर करती हैं। ऐसा करते हुए वे सोम रश्मियाँ सम्पूर्ण खगोलीय मेघ में व्याप्त हो जाती हैं। इसी प्रकार सोम प्रधान विद्युत् ऋणावेशित कण भी सम्पूर्ण खगोलीय मेघ और कालान्तर में सूर्यलोक में व्याप्त हो जाते हैं।

2. आधिदैविक भाष्य- **(पवमानाः, स्वर्दृशः)** विद्युत् के समान गत्यादि व्यवहार करने वाले अर्थात् विद्युत् की भाँति शुद्ध मार्गों पर गमन करते हुए सूक्ष्म कण वा विकिरण **(अपघ्नन्तः, अराव्णः)** मार्ग में

आने वाले ऐसे कण, जो संयोग-वियोग क्रियाओं में भाग नहीं लेते हैं अथवा बाधा डालते हैं, को दूर हटाते हुए चलते हैं। **(ऋतस्य, योनौ, सीदत)** {**ऋतम्= अग्निर्वा ऋतम्** (तै.ब्रा. २/१/११/१)} वे कण अग्नि के कारणरूप प्राण तत्त्व में निरन्तर निवास करते हैं अर्थात् वे प्राणों में ही निवास और प्राणों में ही प्राणों के द्वारा गमन करते हैं।

भावार्थ- इस ब्रह्माण्ड में जो कण लगभग प्रकाश के वेग से गमन करते हैं, वे कण अथवा विकिरण मार्ग में बाधक पदार्थों को परे हटाते हुए अपने मार्ग को निर्बाध बनाते हुए चलते हैं। इसका अर्थ यह है कि वे विभिन्न आयन्स वा इलेक्ट्रॉन्स को दूर नहीं हटाते, बल्कि उनके द्वारा उत्सर्जन और अवशोषण की क्रियाएँ करते हुए निरापद रूप से निरन्तर गमन करते रहते हैं। इन क्रियाओं के कारण उनकी वास्तविक शुद्ध गति में कुछ न्यूनता भी आती है। यदि अवशोषण व उत्सर्जक पदार्थ अधिक मात्रा में विद्यमान हो, तो उसी अनुपात में गमन करने वाले कणों की परिणामी गति कम होती चली जाएगी। वर्तमान विज्ञान द्वारा परिभाषित डार्क मैटर इन सूक्ष्म कणों वा विकिरणों के साथ कोई अन्योन्य क्रिया नहीं करता, इसलिए उस पदार्थ को वे कण वा विकिरण दूर हटाते हुए निर्बाध गमन करते रहते हैं। ये कण वा विकिरण सूर्यादि तारों, अन्य आकाशीय लोकों, प्राणियों के शरीरों वा वनस्पतियों अथवा खुले अन्तरिक्ष में सर्वत्र यही व्यवहार दर्शाते हैं।

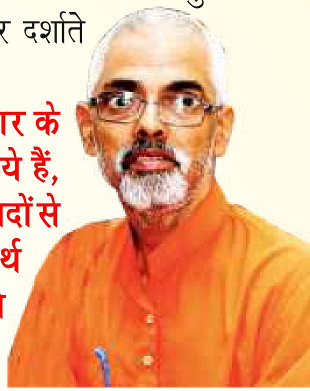

ध्यातव्य- हमने यहाँ दो प्रकार के आधिदैविक भाष्य प्रस्तुत किये हैं, इसी प्रकार 'पवमान स्वर्दृक्' पदों से तारे, ग्रहादि लोकों का अर्थ ग्रहण करके अन्य भाष्य भी किये जा सकते हैं।

क्रमशः

लेखक- आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक
श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास, वेद विज्ञान मन्दिर
भागलभीम, भीनमाल
चलभाष- ९४१४८३४४०३

जिस दिन वेद के मन्त्रों से धरती को सजाया जाएगा।

जिस दिन वेद के मंत्रों से, धरती को सजाया जाएगा।
उस दिन मेरे गीतों का, त्योहार मनाया जाएगा।।
खेतों मे सोना उपजेगा, झूमेगी डाली-डाली।
वीरानों की कोख से पैदा, होगी जिस दिन हरियाली।।
विधवाओं के सूने मस्तक पर, जब फैलेगी लाली।
दीन अनाथों निराश्रितों के, घर-घर होगी खुशहाली।।
निर्धन की कुटिया मे जिस दिन, दीप जलाया जाएगा।
खलिहानों की खाली झोली, भर जाएगी मेहनत से।।
इन्सानों की मजबूरी जब, टकराएगी दौलत से।
सदियों का मासूम लड़कपन, जाग उठेगा गफलत से।।
कर्म वीर पौरुष के बेटे, जब जूझेंगे किस्मत से।
भूखे बच्चों को जिस दिन, भूखा न सुलाया जाएगा।।
उस दिन मेरे गीतों का, त्यौहार मनाया जाएगा।।
जिस दिन काले बाजारों में, धन के चोर नहीं होंगे।
जिस दिन मदिरा के शैदाई, तन के चोर नहीं होंगे।।
जिस दिन सच कहने वालों के, मन कमजोर नहीं होंगे।
अण्डे मांस के खाने वाले, आदम खोर नहीं होंगे।।
झूठी रस्मों को जिस दिन, नीलाम कराया जाएगा।
उस दिन मेरे गीतों का, त्यौहार मनाया जाएगा।।
वीर शहीदों की कुर्बानी की, जिस दिन पूजा होगी।।
बिस्मिल और सुभाष की जब, जिन्दगानी की पूजा होगी।
वीर शिरोमणि झांसी वाली, रानी की पूजा होगी।।
सब कुछ दिया देश की खातिर, दानी की पूजा होगी।
दयानन्द के स्वप्नों को साकार बनाया जाएगा।।
उस दिन मेरे गीतों का, त्यौहार मनाया जाएगा।।

राम बारह वर्ष बाद शम्बूक का वध करने के लिये दण्डकारण्य में आये हैं। (यह प्रकरण भी पूर्णतः प्रक्षिप्त है। - सम्पादक) यहाँ वासन्ती कहती है-

अयि कठोर यशः किल ते प्रियः।
किमयशो ननु घोरमतः परम्।
किमभवद् विपिने हरिणीदृशः।
कथय नाथ! कथं बन मन्यसे।।

हे कठोर! तुम्हें यश ही प्रिय था। फिन्तु इससे बढ़कर अपयश और क्या हो सकता है? बताइये नाथ! उस मृगनयनी का वन में क्या हुआ? बताइये आप इस विषय में क्या सोचते हैं? राम सोचते हैं वन में हिंसक प्राणी उसे खा चुके होंगे। वासन्ती पूछती है कि

आखिर यह दुष्कृत्य आपने क्यों किया? असहाय होकर उत्तर देते हैं- **'लोको न मृष्यतीति।'** लोगों को स्वीकार नहीं था। राम ने एक समर्पित प्रजा पालक के रूप में प्रजा के हित के लिये सीता के साथ ही अपने सुखों का परित्याग किया था।

भागीरथी के प्रभाव से अदृश्य बनी हुई सीता अपने दोनों पुत्रों की बारहवीं वर्षगाँठ पर सूर्यदेवता की अर्चना करने के किये आती है। राम को देखकर तथा अपने प्रति उनके उद्‌गार सुनकर भाव-विह्वल हो जाती है। इसी वन में सीता के साथ बिताये हुए पुराने दिनों को याद करके राम अचेत हो जाते हैं। सीता अपने हाथ के स्पर्श से उनकी चेतना लौटाती है। अदृश्य बनी सीता को राम देख नहीं पाते लेकिन अर्धचेतन अवस्था में स्पर्श को पहचान कर कहते हैं-

गृहीतो यः पूर्वपरिणयविधौ कंकण धरः।

विवाह के समय मांगलिक कंकण को धारण करने वाले जिस हाथ को मैंने पकड़ा था, यह वही चन्द्रमा की किरणों के समान, शीतल स्पर्श वाला सीता का हाथ है। बारह वर्षों के लम्बे वियोग के पश्चात् पत्नी के स्पर्श को पहचान लेना दाम्पत्यसम्बन्ध की गहराई का द्योतक है। सीता आश्वस्त होकर कहती है- **'आर्यपुत्र स एव इदानीमसि त्वम्'** आर्यपुत्र आप अब भी वैसे ही हैं। राम वासन्ती से कहते हैं कि अश्वमेध यज्ञ में उनकी सहधर्मचारिणी सीता की स्वर्णप्रतिमा है। यह सुनकर सीता का मन सर्वथा निर्मल हो जाता है। वह गद्‌गद् होकर कहती है **आर्यपुत्र! 'इदानीमसि त्वं। अहो उत्खातितसिदानी मे परित्यागशल्यमार्यपुत्रेण।'**

आर्य पुत्र! आपने मेरे परित्याग के शूल को निकाल दिया। आगे वह आत्मप्रशंसा करती है कि धन्य है वह

स्त्री जिसे आर्यपुत्र इतना सम्मान देते हैं। इस प्रकार राम के पश्चाताप और सीता के प्रति उनके अनन्य प्रेम ने सीता के दुःखी मन को प्रसन्न कर दिया। इससे पति-पत्नी के सम्बन्ध और भी पावन व दृढ़तर स्नेह-सूत्र में आबद्ध हो गये। यह है भारतीय परिवार की सुदृढ़ आधार भूमि जो टिकी है परस्पर प्रेम, विश्वास और बलिदान पर।

संयुक्त परिवार में सास ससुर आदि वृद्ध जनों के संरक्षण में दाम्पत्य सम्बन्ध सुरक्षित रहते हैं। उनकी उपस्थिति में युवावर्ग अकार्य करने का साहस नहीं कर पाता। वनदेवी वासन्ती कहती है कि कुलगुरु वसिष्ठ, आर्या अरुन्धती और राजमाताओं की उपस्थिति में राम ने सीता-त्याग का दुष्कृत्य कैसे किया? उत्तर मिलता है- वे सब ऋष्यशृंग के यज्ञ में गये थे। बारह वर्षों के यज्ञ के पश्चात् भी वे अयोध्या नहीं गये। अरुन्धती ने कहा-

'नाहं वधू विरहिताम् अयोध्यां गच्छामि।'

जिस अयोध्या में सीता नहीं है मैं वहाँ नहीं जाती। राम की माताओं ने भी उनका अनुगमन किया। अरुन्धती मुनि वसिष्ठ की पत्नी थी। वह सबसे प्रबुद्ध और सम्मानित महिला थी। इन वृद्ध माताओं ने राम को क्षमा नहीं किया। वे सब वसिष्ठ के साथ वाल्मीकि के आश्रम में आ गईं। राजा जनक भी आ चुके थे।

भवभूति का उद्देश्य प्रजाजनों को उनके गलत आरोप के दुष्परिणाम का साक्षात्कार करवाकर सीता के रूप में स्त्री के सम्मान को प्रतिष्ठित करना और प्रजा से पश्चाताप कराना था। इसीलिये नाटक के अन्तिम अंक में गर्भांक (एक छोटा नाटक) की योजना है। इसमें सीता-परित्याग के बाद की घटनाओं को नाटक के माध्यम से वाल्मीकि सम्पूर्ण प्रजाजन के समक्ष प्रस्तुत करते हैं। भवभूति ने भागीरथी, पृथ्वी तथा वनदेवी वासन्ती को मानवरूप में प्रस्तुत किया है। भागीरथी अयोध्यावासियों की माता समान सीता के श्वसुर कुल की देवी है और पृथ्वी सीता की माता है। नाटक में सीता वाल्मीकि आश्रम में नहीं जाती। वह भागीरथी नदी में जाकर लव-कुश को जन्म देती है। भागीरथी और पृथ्वी दोनों बालकों को लेकर आती हैं। माता पृथ्वी सीता के दुःख से व्याकुल होकर राम को उलाहना देती हैं-

न प्रमाणीकृतः पाणिर्बाल्ये बालेन पीडितः।
नाहं न जनको नाग्निर्न वृत्तिर्न सन्ततिः॥

देवि भागीरथि! आप लोगों के राम ने बाल्यावस्था (श्री राम का विवाह युवावस्था में हुआ था। -सम्पादक) में ग्रहण किये गये सीता के हाथ को, न मुझको, न जनक को, न अग्नि को न सीता के सतीत्व को और ना ही गर्भस्थ शिशु को प्रमाण माना। क्या राम का यह आचरण उचित है? दर्शकों में बैठे हुए राम ने अपराध स्वीकार करते हुए कहा- 'माता पृथ्वी मैं ऐसा ही हूँ। भागीरथी पृथ्वी को समझाती है कि हे

वसुन्धरे! आप तो संसार का शरीर हैं। फिर अनजान की तरह क्यों व्यवहार कर रही हैं? पृथ्वी ने कहा- मैं सब जानती हूँ लेकिन सन्तान का दुःख देखा नहीं जाता। अरुन्धती पुरवासियों की भत्सर्ना करती हुई कहती है कि- हे! नागरिकों! एवं ग्रामवासियों! पृथ्वी और भागीरथी ने जिसकी प्रशंसा की है। देवताओं द्वारा पूजनीय चरित्रवाली सूर्यकुल की वधू को आप स्वीकार करें। इस विषय में आपका का क्या मत है? प्रजा सिर झुकाकर सीता को नमन करती है। सीता ससम्मान परिवार में आती है।

इस प्रकार रामायण की कथा में परिवर्तन करते हुए भवभूति ने नाटक को सुखान्त रूप दिया है। इसमें भारतीय परिवार की बृहद भूमिका है, साथ ही नारी पर किये जाने वाले आरोप व अत्याचार का विरोध मुखरित हुआ है। ऐसे जनमानस को बदलने में राम

जैसे राजा भी समर्थ नहीं हैं लेकिन स्नेह और सौ जन्म के सूत्र में बंधा हुआ संयुक्त परिवार समाज को सही दिशा दे सकता है। परिवार की शक्ति अपार है। त्याग, निष्ठा और दृढ़ संकल्प से दोष का विरोध करने वाले स्वजनों और महानुभावों को गुरुजन, ऋषियों और देवताओं का भी प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में सहयोग मिलता है, यह हम भारतीयों की भी आस्था है। भवभूति ने इसे भावों की गहराई, कविता की

सरसता तथा उदात्त महिमा के साथ प्रस्तुत किया है। परिवार के स्नेह-सम्बन्धों का जो भव्य एवं शालीन रूप इस नाटक में विन्यस्त है, वह विश्व साहित्य में दुर्लभ है। इस रूप में भवभूति भारतीय सामाजिक जीवन के प्रतिनिधि नाटककार हैं।

- डॉ. (श्रीमती) गायत्री पँवार
सेवानिवृत्त सर्व विभागाध्यक्षा, संस्कृत
राजकीय मीरा कन्या महाविद्यालय, उदयपुर

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो। सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु, कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है- सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपया निम्नानुसार सहयोग कर लागत मूल्य से आधी कीमत में सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ के कवर पर दिया जावेगा।

1000 प्रतियों के प्रकाशन हेतु 25000 रुपये का दान देने का श्रम करें। 10 प्रतियाँ निशुल्क आपके पास भेजी जाएँगी।

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अन्तर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, उदयपुर खाता क्रमांक 310102010041518, IFSC-UBIN 0531014 में जमा कर सूचित करें।

निवेदक

अशोक आर्य अध्यक्ष-न्यास	भवानीदास आर्य मंत्री-न्यास	डॉ. अमृत लाल तापड़िया संयुक्तमंत्री-न्यास

विश्व भर से आने वाले पर्यटकों के नवलखा महल, उदयपुर के बारे में विचार

यहाँ आकर स्वामी दयानन्द जी सरस्वती एवं सोलह संस्कारों की जानकारी बहुत अच्छी तरह से मिली। समाज में ऐसे महापुरुषों की जीवन-गाथाओं को सुनना व जानकारी प्राप्त करना बहुत जरूरी है। तभी व्यक्ति स्वयं का, समाज का तथा देश का विकास कर सकेगा। धन्यवाद।

- गौतम कड़ेला, भीमासर-जोधपुर

इस पवित्र स्थल पर आकर हमें अत्यन्त प्रसन्नता हुई। महर्षि दयानन्द की इस तपःस्थली से ही हमें सत्यार्थप्रकाश रूपी अमर ग्रन्थ प्राप्त हुआ। वास्तव में यह सभी भारतीयों के लिए तीर्थ स्थान है इसलिए इस स्थान पर सभी को एक बार अवश्य आना चाहिए। यहाँ थोड़े समय में हमें बहुत कुछ सीखने को मिलता है। यह स्थान वेदों का पवित्र स्थल है। वैदिक विचारों को आमजन तक पहुँचाने का एक अनमोल मार्ग है।

- चन्द्रपाल आर्य, वन्धपाली

नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र; उदयपुर अपने आप में एक अद्वितीय कला, सम्पूर्ण भारतीय संस्कृति, सोलह संस्कारों को समेटे हुए है जो कि इसके दिग्दर्शन से प्रकाशित होता है। स्वामी दयानन्द जी के जीवन-दर्शन, अमर क्रान्तिकारियों के विषय में, मिनी थियेटर के माध्यम से अद्‌भुत जानकारी के साथ सर्वकला का दर्शन एक छत के नीचे हो, जिसका यह स्थान अद्‌भुत उदाहरण है।

- सुनील सोगण (रंगकर्मी), बदनपुरा; चौमूँ-जयपुर

आज हम पूरे ग्रुप के साथ नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र आये। अशोक आर्य जी ने हमारा बहुत अच्छा स्वागत किया। एक-एक चित्र एवं इतिहास के बारे में बड़े सूक्ष्म तरीके से समझाया। आर्य समाज का यह इतना अद्‌भुत स्थान है जो स्वामी जी के सभी कार्यों का सचित्र वर्णन करता है। सभी आर्यों को इस स्थान का भ्रमण अवश्य ही करना चाहिए और इसको आगे बढ़ाने के लिए सभी को आर्थिक सहयोग ज्यादा-ज्यादा देना चाहिए।

- मुकेश आर्य; रोहतक (हरियाणा)

मृत्कुम्भबालुकारन्ध्रपिधानरचनार्थिनः।
दक्षिणावर्तशंखोऽयं हन्त चूर्णीकृतो मया।।

– साहित्यदर्पण ३/१४२

स्थाल्यां वैदूर्यमय्यां पचति तिलकणाँश्नान्दनैरिन्धनोधैः।।

– नी.श. ६२

श्री महाराज रूपक शैली में जीवन की अमूल्यता का दिग्दर्शन कराने वाली एक दीन-हीन लकड़हारे तथा चन्दन के वन से सम्बन्धित कहानी सुनाया करते हैं। कहानी इस प्रकार है कि एक गरीब निर्धन व्यक्ति है, उसके पास चन्दन का वन है, पर उसे यह नहीं पता कि वह इतना मूल्यवान् है। सो एक दिन आजीविका के लिए अपने साथ कुल्हाड़ी लेकर अपने चन्दन के जंगल में पहुँच जाता है, लकड़ियाँ काटता है, उनके

कोयले बनाता है और निकटवर्ती शहर में लाकर बेच देता है। उसके बदले में जो पैसे मिलते हैं, उनसे अपना तथा अपने परिवार का गुजारा चलाता हुआ हँसी खुशी में अपना समय बिताने लगता है। यह क्रम बहुत लम्बे समय तक चलता रहता है। आखिर एक दिन उसके मन में विचार आता है कि अब तो तेरे पास यह थोड़ा सा ही जंगल शेष रह गया है। इसलिए कोयला बनाकर बेच आने के बजाए; क्योंकि कोयला बनाने में अधिक लकड़ियाँ अपेक्षित होती थीं, सो बेशक थोड़ा कष्ट उठाकर ही सही, सीधे लकड़ियाँ ही बेचने के लिए ले चलनी चाहिए।

अतः एक वृक्ष से कुछ लकड़ियाँ काटकर अपने सिर पर उठाकर शहर में बेचने के लिए चल देता है। चन्दन की लकड़ियाँ देखकर बाजार में कई विशेषज्ञ लोग इसे घेर कर पूछने लगते हैं कि भाई ये सब चन्दन की लकड़ियाँ कहाँ ले जा रहे हो? क्या बेचने के लिए हैं? इस व्यक्ति की स्वीकृति पाकर उनमें से एक व्यक्ति पाँच सौ रुपये निकालकर देने लगता है, तो दूसरा छः सौ, तीसरा सात सौ, चौथा आठ सौ, पाँचवा नौ सौ, छठा एक हजार रुपये की अधिकतम बोली लगा देता है। इतने में एक और व्यक्ति आ पहुँचता है, देखता है, यह तो पुराने पेड़ का एकदम असली चन्दन है, वास्तव में कीमती चीज है, सीधे ही १५०० रुपये बोल देता है।

अब तो लकड़हारा यह सब देखकर, उन सब की ये बातें सुनकर धाड़ मारकर गिर पड़ता है। चारों तरफ अरे भाई! क्या हो गया, क्या हो गया- ऐसी आवाज आने लगती है। तुझसे हम कोई जबरदस्ती थोड़े ही छीन रहे हैं। तुझे अपनी चीज का कम पैसा दिखाई दे रहा है, तो मत दे। साफ-साफ बता, कितना पैसा माँग रहा है? अब वह अपनी बीती कहानी सुनाता है

कि मैं तो इस हिसाब से अरबों का स्वामी था। मैंने यह क्या नादानी कर डाली? प्रतिदिन एक पेड़ को काटता और थोड़ी सी सुविधा के लिए उनका कोयला बनाकर यहाँ लाकर बेचता रहा। मैंने अपने बड़े जंगल को जो मुझे मेरे माता-पिता से मिला था, उसी प्रकार समाप्त कर डाला, क्यों मुझे होश नहीं आया? क्यों मैं इतने अँधेरे में रहा? अब मैं क्या करूँ? बहुत थोड़े से पेड़ ही मेरे पास शेष बचे हैं। बस! और कोई बात नहीं, मैं तो अपनी मूर्खता पर पश्चाताप कर रहा हूँ।

श्री महाराज कहते हैं- केवल उस लकड़हारे की नासमझी पर ही हमें नहीं हँसना चाहिए। अपनी तरफ भी देख लेना चाहिए। ऐसा न हो कि कहीं हम भी उस परमपिता के द्वारा दिये गये मनुष्य जीवन रूपी चन्दन-वन को विषयों की आग में जलाकर कोयला बना रहे हों? ध्यान से मनुष्य-जीवन का निरीक्षण किया जाए तो यही लगता है, मनुष्य अपने ही हाथों इस महान् जीवन को कुछ थोड़े से सुखों के लिए सस्ते भाव बेचे चला जा रहा है। सम्पूर्ण जीवन ही क्षुद्रताओं व तुच्छताओं में बीत जाता है। जब थोड़ा सा समय शेष रहता है, तब आँखें खुलती हैं (वे भी सबकी नहीं) कि यह क्या हो गया? मनुष्य अपने तुच्छ अहं की तृप्ति के लिए, अपनी तुच्छ इच्छाओं व मनोकामनाओं को पूरा करने के लिए क्या उस अज्ञानी लकड़हारे की तरह अपने ही हाथों अपने ऊपर कुल्हाड़ी नहीं बरसाता रहता? प्रातः से सायं यावत् यह सारी की सारी मारा-मारी, जो वह कर रहा है, क्या उसके अपने अमूल्य जीवन की बलि नहीं चढ़ायी जा रही? व्यक्ति या तो जमीन-जायदाद, रुपया-पैसा, भवन-निर्माण इत्यादि वस्तु-संग्रह में लगा रहता है या फिर शब्द-स्पर्श-रूप-रसादि के विषय-सुख में डूब जाता है अथवा लोगों में अपनी पहचान बनाने के लिए महान् संघर्ष करता है। यह सब पाने के लिए दूसरों को दाँव पर रखना पड़े, किसी का कितना भी दिल दुखाना पड़े, बस वह निरन्तर करता चला जाता है। उसके लिए ये सब बहुत ही सामान्य-सी बातें होती हैं। वास्तव में यह क्या जीवन रूपी चन्दन-वन इन्हीं सब अत्यन्त सतही चीजों को पाने के लिए मिला है? मनुष्य क्या कभी इस बात को देख पाता है कि उसका मन किस प्रकार दूसरों का शोषण व हिंसा करने में जुटा रहता है? हिंसा के द्वारा जो उसके मन को सुख मिलता है क्या वह परिणाम में उसी के लिए दुःख में नहीं बदल जाता?

जिन विषय-सुखों को वह हँस-हँसकर भोगता है- क्या वे ही उसके लिए हलाहल विष का रूप धारण नहीं कर लेते? लकड़हारे की मूर्खता पर तो हम झट से हँस देते हैं, पर उसकी अन्धता व जड़ता पर उपहास करने वाले व्यक्ति को स्वयं की मूर्खता क्यों नहीं नजर आती? यह बुद्धिमान् मनुष्य दूसरों के सन्दर्भ में जितना चतुर, गम्भीर, महामति दिखाई देता है- जब स्वयं के अवलोकन की बात आती है- तो बेहोश हो जाता है? क्यों अपनी आँखें बन्द कर लेता है? यह मनुष्य यदि एक क्षण रुककर अपने आप को पूरी तरह देख ले, तो क्या यह बात उसके समक्ष सर्वथा स्पष्ट नहीं हो जायेगी कि यात्रा की दिशा तो तूने लक्ष्य से विपरीत पकड़ी हुई है। क्या दूसरों के रिझाने में ही अपने सम्पूर्ण कर्त्तव्य की इतिश्री हो जाती है?

क्या इस अमूल्य जीवन की यही कृतार्थता है कि निरन्तर द्वन्द्वों में अर्थात् आन्तरिक व बाह्य संघर्ष में जीते रहना? क्या इस सृष्टि के सर्वोत्कृष्ट प्राणी मनुष्य ने सुख व दुःख के सतत चल रहे चक्र को तोड़ने में भी कभी अपना मन लगाया है? क्या कभी यह भी इच्छा करता है कि मैं आन्तरिक स्वतन्त्रता कैसे प्राप्त करूँ? क्या कभी विचार करता है कि जीवन की धन्यता वस्तु संग्रह और भोग में नहीं है, बल्कि सेवा में या ज्ञान में और पूर्ण स्वाधीन होने में है? क्या कभी भयमुक्त जीवन जीने के उपायों को खोजने के लिए भी प्रयास किया है? यदि यह सब नहीं कर रहा है तो क्या स्पष्ट ही इस जीवन रूपी चन्दन-वन को कोयला बनाकर सस्ते भाव

बेचने-जैसा नहीं हो रहा और लकड़हारे की भाँति क्या उसे अन्त समय में रोना नहीं पड़ेगा? यदि व्यक्ति बुद्धिमान् है तो अवश्य ही उसे अपनी जीवन-यात्रा की दिशा का अवबोध प्राप्त करना चाहिए, अन्यथा सिवाय रोने व पश्चाताप करने के उसके हाथ-पल्ले कुछ भी नहीं पड़ने वाला है।

अपने आपको प्रज्ञावान् समझने वाले व्यक्तियों को तो समय रहते सचेत हो ही जाना चाहिए! वस्तुतः वे ही सार्थक जीवन जी पाते हैं, जिनकी दीर्घदृष्टि वर्तमान कालिक क्रियाओं के परिणाम को सदा देख रही होती है। लक्ष्य को बिना देखे ही वे तीर नहीं छोड़ते, प्रत्येक कर्म का चुनाव उसके परिणाम को देखकर ही करते हैं। यदि ऐसा है तो फिर रोना क्योंकर हो।

साभार- अन्तर्जाल

दान की अपील

सत्यार्थ प्रकाश रचना स्थली नवलखा महल से NMCC के रूप में सत्यार्थ शिक्षाओं को जिस अद्भुत प्रकार से प्रसारित किया जा रहा है और सहस्रों लोग आकर्षित हो इसका लाभ ले रहे हैं जिस कारण से यह स्थल अब विख्यात होता जा रहा है। आपसे प्रार्थना है कि इस यज्ञ में अपनी छोटी–बड़ी आहुति अवश्य देने की कृपा करें। इस हेतु साथ में दिए यूपीआई कोड का भी आप इस्तेमाल कर सकते हैं। बस एक अनुरोध है कि अगर आप अर्थ सहयोग प्रदान करें तो चलभाष 9314235101, 7976271159 अथवा 9314535379 पर सूचित अवश्य करें।

G Pay

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास

BHIM UPI

पत्रिका से सम्बन्धित किसी प्रकार की जानकारी/शिकायत के लिये निम्न चलभाष पर सम्पर्क करें।
09314535379

पाठकों के पास 'सत्यार्थ सौरभ' डाक विभाग की अव्यवस्था के कारण अनेक बार समय पर नहीं पहुँच पाती है। पाठक न्यास को ही दोषी मानते हैं, जिसे अनुचित भी नहीं कहा जा सकता। परन्तु वास्तविकता है कि यहाँ से प्रत्येक माह की 7 तारीख को पत्रिका प्रेषित कर दी जाती है। पश्चात् सब कुछ डाक विभाग की कृपा पर निर्भर करता है। फिर भी आपसे निवेदन है कि प्रत्येक माह की 20 तारीख तक भी पत्रिका न मिलने पर कृपया इसी चलभाष पर सम्पर्क करें।

–सम्पादक

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

श्री रतिराम शर्मा, श्री रामेश्वर दयालु गुप्त; गाजियाबाद, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री सुरेश चन्द्र आर्य, श्री दीनदयाल गुप्त, स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री भवानी दास आर्य, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री नारायण लाल मित्तल, श्रीमती आभा आर्या, श्रीमती शारदा गुप्ता, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, श्री सुधाकर पीयूष, आर्यसमाज गाँधीधाम, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, प्रो. आई. जे. भाटिया; नासिक, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती ओमप्रकाश वर्मा; जयपुर, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री दीपचन्द आर्य; बिजनौर, श्री खुशहालचन्द आर्य, गुप्तदान उदयपुर, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्री मोती लाल आर्य, श्री रघुनाथ मित्तल, श्री जयदेव आर्य, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, श्री नरेश कुमार राणा, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री वीरेन्द्र मित्तल, श्री विजय तायलिया, गुप्त दान दिल्ली, प्रो. आर.के.एरन, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टॉक, श्री विकास गुप्ता, श्री भारतभूषण गुप्ता, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री एम.पी. सिंह, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री विवेक बंसल, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, श्री लोकेश चन्द्र टांक, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरसेन मुखी, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई, श्री राजेन्द्रपाल वर्मा, वडोदरा, प्रिन्सीपल डी. ए. वी. एच. जेड. एल. सी. सै. स्कूल, दरीबा (राजसमन्द), आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, होशंगाबाद, श्री ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, नोएडा, श्री भरत ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, अहमदाबाद, श्री सुरेन्द्र कर्मचन्दानी, पुणे, डॉ. आनन्द कुमार शर्मा, नई दिल्ली, श्री रमेश चन्द्र गुप्ता, यू.एस.ए., श्री शुद्धबोध शर्मा; श्रीगंगानगर, श्री कन्हैया लाल आर्य, शाहपुरा, डॉ. सत्या पी. वार्ष्णेय; कनाडा, श्री अशोक कुमार वार्ष्णेय; बडोदरा, श्री नागेन्द्र प्रसाद गुप्ता, बगहा (बिहार), श्री गणेशदत्त गोयल, बुलन्दशहर (उ. प्र.), श्री पूर्णचन्द आर्य, कानोड़, श्री वेदप्रकाश आर्य; नई दिल्ली, श्री सत्यनारायण शर्मा; उदयपुर, श्रीमती राधा देवी-रतन लाल राजोरा; निम्बाहेड़ा, श्री सत्यप्रकाश शर्मा; उदयपुर, सुदर्शन कपूर; पंचकूला, श्री देवराज सिंह; उदयपुर, श्रीमती ललिता मेहरा; उदयपुर, श्री कृष्ण लाल डंग आर्य; हिमाचल प्रदेश, श्री जी. राजेश्वर (गौड़) आर्य; हैदराबाद, पुरुषोत्तम लाल मेघवाल; उदयपुर, श्री बलराम जी चौहान; उदयपुर, श्री राकेश जैन; उदयपुर, श्रीमती कमलकान्ता सहगल; पंचकूला, श्री अम्बालाल सनाढ्य; उदयपुर, श्री भँवर लाल आर्य; उदयपुर, श्री वेलजी धनजी भाई; महाराष्ट्र, श्री सज्जनसिंह कोठारी; जयपुर, श्री चेतन प्रकाश आर्य; जोधपुर, ठाकुर जितेन्द्र पाल सिंह; अलीगढ़, श्री घनश्याम शर्मा; जयपुर, श्री मानसिंह चौहान; डूंगरपुर, श्री अजय कुमार गोयल; पानीपत, श्री रामजीवन मिश्र; जयपुर, श्रीमती ममता आर्या; नई दिल्ली, श्री यश आर्य; कोलकाता, श्रीमती संचिता जैन; उदयपुर, श्रीमती कुसुम गुप्ता; सूरत

बाबासाहेब भीमराव आम्बेडकर ने सावरकर के बारे में कहा था- 'मैं इस अवसर का उपयोग सामाजिक सुधारों के क्षेत्र में आपके कामों की प्रशंसा के लिए करता हूँ।'

विनायक दामोदर वीर सावरकर ना केवल स्वाधीनता संग्राम के सेनानी थे बल्कि वो महान् देशभक्त, क्रान्तिकारी, चिन्तक, लेखक, कवि, ओजस्वी वक्ता और देश को गौरवशाली बनाने की सोच रखने वाले दूरदर्शी स्वप्नदृष्टा भी थे। वीर सावरकर जैसे बहुत कम क्रान्तिकारी एवं देशभक्त होते हैं, जिनका पूरा जीवन राष्ट्र यज्ञ की बलिबेदी पर समिधा बन गया। उनकी कलम में चिंगारी थी, उनके कार्यों में भी क्रान्ति की अग्नि धधकती थी।

सावरकर ऐसे महान् सपूत थे जिनकी कविताएँ एवं विचार भी क्रान्ति मचाते थे और वह स्वयं भी महान् क्रान्तिकारी थे। उनमें तेज भी था, तप भी था और त्याग भी था। १९०९ में लिखी पुस्तक 'द इंडियन वॉर ऑफ इंडिपेंडेंस-१८५७' में सावरकर ने इस लड़ाई को ब्रिटिश सरकार के खिलाफ आजादी की पहली लड़ाई घोषित किया। वीर सावरकर १९११ से १९२१ तक अंडमान जेल में रहे। १९२१ में वे स्वदेश लौटे और फिर ३ साल की जेल में सजा काटी।

९ अक्टूबर, १९४२ को भारत की स्वतंत्रता के लिए चर्चिल को समुद्री तार भेजा और आजीवन अखण्ड भारत के पक्षधर रहे। सावरकर एक मात्र ऐसे भारतीय थे जिन्हें एक ही जीवन में दो बार आजीवन कारावास की सजा सुनाई गयी थी। काले पानी की कठोर सजा के दौरान सावरकर को अनेक यातनाएँ दी गईं। अंडमान जेल में उन्हें छः महीने तक अंधेरी कोठरी में रखा गया। दुनिया के वे ऐसे पहले कवि थे जिन्होंने अंडमान के एकान्त कारावास में जेल की दीवारों पर कील और कोयले से कविताएँ लिखीं और फिर उन्हें याद किया।

वीर सावरकर और बलिदानी क्रान्तिकारी भगत सिंह

इस प्रकार याद की हुईं १० हजार पंक्तियों को उन्होंने जेल से छूटने के बाद पुनः लिखा। अनेक प्रकार की कठोर यातनाएँ सहने के बाद भी सावरकर ने अंग्रेजों के सामने झुकना स्वीकार नहीं किया। सावरकर जेल में रहते हुए भी स्वतंत्रता आन्दोलन में सक्रिय रहे। शहीद-ए-आजम भगत सिंह के मन में सावरकर के देशप्रेम और उनके विचारों को लेकर कितनी श्रद्धा थी, इस बात को भगत सिंह के लिखे एक लेख के माध्यम से आज भी हम समझ सकते हैं।

भगत सिंह ने 'विश्व प्रेम' नाम के लेख में, जो १५ और २२ नवम्बर, १९२४ के 'मतवाला' अंक में दो बार प्रकाशित हो चुका है, उसमें भगत सिंह, सावरकर के विषय में लिखते हैं- 'विश्वप्रेमी वह वीर है जिसे भीषण विप्लववादी, कट्टर अराजकतावादी कहने में हम लोग तनिक भी लज्जा नहीं समझते, वही वीर सावरकर। विश्वप्रेम की तरंग में आकर घास पर चलते-चलते रुक

जाते कि कोमल घास पैरों तले मसली जाएगी।' शहीद-ए-आजम ने ऐसा लिखा था।

यह साबित हो गया है कि भगत सिंह ने सावरकर की किताब '१८५७ का स्वातंत्र्य समर' का अंग्रेजी अनुवाद प्रकाशित किया था और क्रान्तिकारियों में इसका प्रचार किया था। कुछ लेखकों ने दावा किया है कि सावरकर और भगत सिंह रत्नागिरी में मिले थे लेकिन इसकी कोई निर्विवाद पुष्टि नहीं हो पायी। गाँधी जी के अनुयायी वाई. डी. फड़के के अनुसार, भगत सिंह ने सावरकर की '१८५७ का स्वातंत्र्य समर' से प्रेरणा पाई। भगत सिंह अपनी जेल डायरी में कई लेखकों के उद्धरण नोट किए हैं।

उसमें केवल सात भारतीय लेखक हैं, जिनमें से एकमात्र सावरकर हैं जिनके एक से अधिक उद्धरण भगत सिंह ने अपनी डायरी में शामिल किए हैं और उनमें से छः के छः उद्धरण एक ही पुस्तक, 'हिन्दूपदपादशाही' से हैं। २३ मार्च, १९३१ को जब भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव को फाँसी दी गई, उस समय सावरकर ने एक कविता लिखी, जिसका पहला अंश है-

हा, भगत सिंह, हाय हा!
चढ़ गया फाँसी पर तू वीर हमारे लिये हाय हा!
राजगुरु तू, हाय हा !
वीर कुमार, राष्ट्रसमर में हुआ शहीद
हाय हा! जय जय हा!
आज की यह हाय कल जीतेगी जीत को
राजमुकुट लायेगी घर पर
उससे पहला मृत्यु का मुकुट पहन लिया
हम लेंगे हथियार वो हाथ में।
जो तुमने पकड़ा था दुश्मन को मारते मारते !

दलितों से भेदभाव के खिलाफ सावरकर ने चलाया था अभियान, आम्बेडकर ने की थी प्रशंसा

वीर सावरकर हमेशा से जात-पात से मुक्त होकर कार्य करते थे। राष्ट्रीय एकता और समरसता उनमें कूट-कूटकर भरी हुई थी। रत्नागिरी आन्दोलन के समय उन्होंने जातिगत भेदभाव मिटाने का जो कार्य किया वह अनुकरणीय था। वहाँ उन्होंने दलितों को मंदिरों में प्रवेश के लिए सराहनीय अभियान चलाया। साथ ही अस्पृश्यता को समाप्त करने की दिशा में महनीय योगदान दिया। महात्मा गाँधी ने तब खुले मंच से सावरकर की इस मुहिम की प्रशंसा की थी।

यही नहीं, संविधान निर्माता बाबासाहेब भीमराव आम्बेडकर ने सावरकर के बारे में कहा था- 'मैं इस अवसर का उपयोग सामाजिक सुधारों के क्षेत्र में आपके कामों की प्रशंसा के लिए करता हूँ। यदि अछूतों को मुख्यधारा के हिन्दू समाज का हिस्सा बनना है तो केवल अस्पृश्यता को समाप्त करना पर्याप्त नहीं होगा। इसके लिए चतुर्वर्ण का अभ्यास समाप्त करना होगा। मुझे यह कहते हुए खुशी हो रही है कि आप उन कुछ लोगों में से हैं, जिन्होंने ऐसा करने की आवश्यकता को पहचाना है।'

महाराष्ट्र के महान् समाज सुधारक महर्षि शिन्दे ने लिखा- 'मैं इस सामाजिक आन्दोलन की सफलता से इतना प्रसन्न हूँ कि मैं भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि वह मेरा शेष जीवन उन्हें (सावरकर को) दे दें।' (सत्यशोधक- ५ मार्च, १९३३)। वहीं प्रसिद्ध लेखक प्रबोधंकर ठाकरे ने लिखा- 'हिन्दू एकता की आवश्यकता को महसूस करने के बाद जाति उन्मूलन का मुद्दा चाहे जितना कठिन हो, इसे हल करना आवश्यक है। इस दिशा में सावरकर के प्रयास प्रशंसनीय हैं।' (स्वराज्य, मुम्बई, २ सितम्बर, १९३६)।

भारत का इतिहास दुनिया के लिए एक प्रेरणा है, पूरे विश्व के लिए अनुकरणीय है। सम्पूर्ण दुनिया भारत की ओर देख रही है, हमेशा भारत में विश्व गुरु की पात्रता निरन्तर प्रवहमान रही है। देश ने कोरोना महामारी के संकट के दौरान दुनिया के सभी देशों के हित-चिन्तन का भाव रखा। बिना किसी भेदभाव के वसुधैव कुटुम्बकम की भावना पर ये नया भारत चल रहा है। यही वीर सावरकर का दर्शन था। यही उनका चिन्तन था कि भारत प्रभुता सम्पन्न गौरवशाली राष्ट्र बने। पूरी दुनिया का पथ-प्रदर्शक करने वाला राष्ट्र बने। जिस पर भारत शनैः-शनैः चल रहा है।

लेखक- ब्रिजेश द्विवेदी
साभार- आप इण्डिया

अच्छे स्वास्थ्य और दीर्घायु के लिए अनिवार्य है अभिवादन शीलता

पुराणों में महर्षि मार्कण्डेय की एक कथा मिलती है। महर्षि मार्कण्डेय मृकण्डु के पुत्र थे। महर्षि मार्कण्डेय जब मात्र पाँच वर्ष के थे तभी उनके पिता मृकण्डु को पता चला कि मेरे पुत्र की आयु तो केवल छह महीने की ही बची है तो उन्हें बड़ी निराशा और चिन्ता हुई। पिता मृकण्डु ने अपने पुत्र का यज्ञोपवीत संस्कार करवाया और उसे उपदेश दिया-

यं कश्चिद् वीक्षसे पुत्र भ्रममाणं द्विजोत्तमम्।
तस्यावश्यं त्वया कार्यं विनयादभिवादनम्।।

पुत्र! तुम जब भी किसी द्विजोत्तम को देखो तो विनयपूर्वक उसका अभिवादन अवश्य करना, उसे प्रणाम करना।

मृकण्डु का पुत्र अत्यन्त आज्ञाकारी बालक था अतः उसने पिता द्वारा प्रदत्त व्रत को दृढ़तापूर्वक धारण

किया। अभिवादन उसके जीवन का अभिन्न अंग बन गया। जो भी बालक के समक्ष आता बालक उसे आदरपूर्वक प्रणाम करना न भूलता। अभिवादन शीलता उसका संस्कार बन गया। एक बार सप्तऋषि भी उस मार्ग से जा रहे थे। बालक मार्कण्डेय ने संस्कारवश अत्यन्त आदरपूर्वक उन्हें भी प्रणाम किया। सप्तऋषियों ने बालक को दीर्घायु होने का आशीर्वाद दिया। सप्तऋषियों के आशीर्वाद से अल्पायु बालक मार्कण्डेय को कल्प-कल्पान्त की आयु प्राप्त हो गई। अपनी अभिवादन शीलता के गुण के कारण वे चिरंजीवी हो गए।

जब कोई सम्बन्धी, मित्र अथवा अन्य अतिथि हमारे घर आता है तो हम न केवल उस समय उसका यथोचित् सत्कार करते हैं अपितु जब वह वापस जाता है तो जाते समय भी उसे सम्मान के साथ विदा करते हैं। कुछ लोग किसी को विदा करते समय किसी भी प्रकार की औपचारिकता का निर्वाह नहीं करते जो उचित प्रतीत नहीं होता। मेहमान को भी चाहिए कि जाने से पहले उचित रीति से इजाजत ले और मेजबान ठीक तरह से उसे विदा करे।

जहाँ तक सम्भव हो मेहमान को बस स्टैण्ड, ऑटो या रिक्शा स्टैण्ड अथवा उसके निजी वाहन तक छोड़ने जाएँ। आज लोगों के पास समय की बेहद कमी है।

कई बार मेहमान को घर के दरवाजे पर ही विदा करना पड़ता है। ये परिस्थितिजन्य विवशता भी हो सकती है लेकिन यदि हम किसी व्यक्ति को घर के दरवाजे से ही विदा कर रहे हैं तो भी शिष्टाचारवश

कुछ बातों का ध्यान रखना जरूरी है। आगन्तुक के बाहर निकलते ही फौरन खटाक से दरवाजा बन्द न करें अपितु तब तक दरवाजा खुला रखें जब तक मेहमान आँखों से ओझल न हो जाए या कम से कम थोड़ी दूर न चला जाए। उसके बाद बिना आवाज किए धीरे से दरवाजा बन्द कर लेना चाहिए।

जैसे किसी के बाहर निकलते ही एकदम भड़ाक से दरवाजा बन्द करना अच्छा नहीं लगता उसी प्रकार यदि रात का समय है तो आगन्तुक के बाहर निकलते ही मेन गेट या जीने की लाइट ऑफ करना भी एकदम गलत है। अपरिचित या अवांछित आगन्तुक से भी नम्रता से पेश आना चाहिए। इसका ये अर्थ नहीं है कि हम अपनी सुरक्षा का ध्यान न रखें। अपरिचित के लिए मेन गेट या लोहे का जाली वाला दरवाजा एकदम से न खोलें। पूर्ण रूप से आश्वस्त होने पर ही दरवाजा खोलें लेकिन इस दौरान बातचीत अथवा पूछताछ में शिष्टाचार का ध्यान रखें।

प्रत्यक्ष रूप से मिलने पर ही नहीं फोन पर बातचीत करते समय भी अभिवादन की औपचारिकता का पालन करना चाहिए। शिष्टाचार एवं अनुशासित जीवन का हमारे स्वास्थ्य एवं आयु से गहरा सम्बन्ध है। इन नियमों का पालन करने से न केवल हमारे सम्बन्ध अधिक मधुर एवं अर्थपूर्ण होंगे अपितु हम तनाव से भी मुक्त रहेंगे जिसका हमारे स्वास्थ्य पर भी सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा और स्वास्थ्य का आयु पर। कहा भी गया है-

अभिवादनशीलस्य नित्यंवृद्धोपसेविन:।
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्यायशोबलम्।।

अर्थात् जो वृद्धजनों, गुरुजनों तथा माता-पिता को नित्य प्रणाम करता है, उनकी सेवा करता है उसकी आयु, विद्या, यश और बल, ये चार चीजें सदैव बढ़ती हैं। और जिस व्यक्ति में इन चार चीजों की वृद्धि होगी उसके स्वस्थ रहने में कोई सन्देह नहीं। दीर्घायु होने और स्वस्थ बने रहने के लिए अभिवादन शीलता व शिष्टाचार का पालन करना किसी तरह भी महँगा सौदा नहीं।

- सीताराम गुप्ता,
ए.डी. १०६सी., पीतमपुरा, दिल्ली - ११००३४
चलभाष- ९५५५६२२३२३
Email : srgupta54@yahoo.co.in

आजीवन सत्यार्थ मित्र

सत्यार्थमित्र योजना में प्रतिवर्ष 5100 रुपए देने के क्रम में कुछ बन्धु प्रतिवर्ष रिन्यूअल कराने के झंझट से विरत रहना चाहते हैं, अतः न्यास ने अपनी पिछली बैठक में यह निश्चय किया है कि आजीवन सत्यार्थमित्र के रूप में जो भाई बहिन रु.51000 एकमुश्त जमा करा दें तो उनका यह सहयोग आजीवन सत्यार्थमित्र के रूप में मान्य होगा। समर्थ आर्यजन इस दिशा में सकारात्मक सहयोग करने का श्रम करें।

मधुमेह नियंत्रक अचूक नुस्खे

मधुमेह भारत ही नहीं विश्व के लिए चिकित्सा वैज्ञानिकों के लिए चुनौती बना है। बहुत तेजी से फैलती जा रही है डायबिटीज की बीमारी। ऐसे में १९८३ से धन्वंतरी आरोग्य संस्थान देहरादून (उत्तराखण्ड) के चिकित्सा वैज्ञानिकों ने भी परम्परागत चिकित्सा सूत्रों के अन्तर्गत मधुमेह रोगियों पर जो लाभकारी और परीक्षित नुस्खे इजाद किए और जो अनुसंधान में सफल सिद्ध हुए उन नुस्खों को जन-जन तक पहुँचाने के लिए इस लेख में प्रकाशित किया जा रहा है।

मधुमेह रोगी को अपनी जीवनशैली आहार–विहार एवं चेष्टा बदलना चाहिए।

१. मधुमेह नियंत्रक आहार मधुमेह रोगी अपना आहार-विहार बदले। सुबह के नाश्ते में रोगी अपने भार के अनुपात में ७०० ग्राम से ८०० ग्राम सीजनल सभी प्रकार के फल (मीठे फल भी) सेवन करें। यदि ७० किलो वजन है तो ७०० ग्राम फल खाएँ। ८० किलो वजन है तो ८०० ग्राम भरपेट फलों का सेवन करें। तथा अन्य कुछ भी ना खाएँ। आहार में ३५० ग्राम कच्ची सब्जियों का सलाद सेवन नियमित करना चाहिए। आहार-विहार के इस परिवर्तन करने मात्र से शुगर लेवल १५ दिन के अन्तराल में सामान्य हो जाता है। तदनुसार ले रहे दवाएँ/इन्सुलिन बन्द करें। यह अनुसंधानित परीक्षित अचूक व रामबाण सूत्र सिद्ध हुआ है।

२. विहार के दृष्टिकोण से मॉर्निंग वॉक, शारीरिक व्यायाम, प्राणायाम, ध्यान-योग बहुत ही आवश्यक है। व्यायाम को जीवन का अंग बनाना चाहिए। किसी योग्य योग प्रशिक्षक से प्राणायाम ध्यान-योग सीखने की आवश्यकता है। जीवन शैली बदलें इसे अपनाएँ।

३. **अचूक नुस्खे**– गुड़मार की पत्ती ३० ग्राम, नीम की पत्ती ३० ग्राम, तुलसी पत्र ३० ग्राम, सदाबहार पत्ती और फूल ३० ग्राम, जामुन की गिरी ५० ग्राम, तज २० ग्राम, कलमी २० ग्राम, वंशलोचन २० ग्राम, जायफल १० ग्राम, जावित्री १० ग्राम, छोटी इलायची १० ग्राम, तेजपत्र चूर्ण ३० ग्राम, करेला के बीज का चूर्ण ३० ग्राम, सत्व गिलोय ३० ग्राम, आमलकी रसायन ३० ग्राम इन सभी को सुखाकर

कूट-पीसकर चूर्ण बनाकर सुरक्षित जार में रखें। मात्रा ३ ग्राम चूर्ण प्रातः एवं सायं गरम पानी में आधा चम्मच हल्दी पाउडर घोलकर मिलाकर नाश्ता के बाद नियमित रूप से सेवन करें।

४. अच्छी खुशबू वाला तेजपात (तमाल पत्र) २५० ग्राम लाकर उसको पीसकर महीन पाउडर बना लें, ५० ग्राम दालचीनी पीसकर मिला लें और सुरक्षित रखें। रात को सोने से पहले एक चम्मच पाउडर एक कांच के गिलास में पानी में ढक कर रखें। प्रातः खाली पेट इसे छानकर पीना चाहिए। यह अनुभूत योग है। परीक्षित एवं रामबाण है।

५. पाँच ग्राम मेथी दाना को कूट कर एक कप पानी में डालकर रात को रखे। प्रातःकाल मेथी चबाकर पानी पी ले या इसकी चाय बनाकर भी सेवन कर सकते हैं। इसके नियमित प्रयोग से लाभ सुनिश्चित होता है यह अचूक नुस्खा है।

६. खरेंटी जड़ी बूटी (बला जड़ी बूटी) का काढ़ा बनाकर या फिर आसवन विधि से अर्क निकालकर सेवन करने से अचूक व चमत्कारिक लाभ होता है। धन्वंतरी आरोग्य संस्थान में अर्क बनाकर १०० रोगियों पर प्रयोग करके शोध अनुसंधान किया गया और मधुमेह नियंत्रण में लाभकारी सिद्ध हुआ।

७. २० मुनक्कों को कांच के बर्तन में डालकर उसमें नींबू स्वरस भरकर रखें। जिससे मुनक्के अच्छी तरह डूब जाए। ३ दिन बाद मुनक्के फूल जाते है। तब प्रातः खाली पेट २-२ मुनक्के सेवन करें। इसे नियमित रूप से सेवन करें (बीज निकालकर खाएँ) यह परीक्षित नुस्खा है।

८. पनीर डोडा १० ग्राम को एक गिलास पानी में शाम को भिगोकर रखें। प्रातः मसलकर छानकर फांट कर नियमित उपयोग से लाभ होता है।

९. आँवला चूर्ण, हल्दी पाउडर, मेथी पीसकर और सौंठ समान मात्रा में लेकर चूर्ण बनाकर एक दो चम्मच भोजन से आधा घण्टा पूर्व गुनगुने जल से सुबह-रात्रि नियमित सेवन से लाभ होता है यह रामबाण है।

१०. दारू हल्दी, देवदारू, आँवला, हरड़, बहेड़ा, नागरमोथा, बिल्वपत्र, तेजपत्र व तुलसीपत्र यवाकुट २० ग्राम की मात्रा में मिश्रण का कार्य (काढा) बनाकर सुबह-शाम भोजन से ३० मिनट पहले नियमित रूप से सेवन करने से कैसी भी शुगर हो नियंत्रण में रहती है बशर्ते आहार-विहार एवं चेष्टा (Lifestyle) बदलें।

११. नीम पत्र, जामुन गुठली, गुड़मार, अश्वगंधा, हरड़, गिलोय समभाग लेकर चूर्ण बना लें। सुबह-शाम नाश्ते व आहार के बाद गुनगुने जल में हल्दी पाउडर मिलाकर नियमित सेवन से लाभ मिलता है।

१२. शिलाजीत तरल (Liquid) पाँच बूँद गर्म दूध में हल्दी पाउडर मिलाकर सुबह-शाम सेवन करने से मधुमेह जन्य दुर्बलता जड़ मूल से ठीक हो जाती है। बसन्तकुसुमाकर रस का भी सेवन लाभकारी सिद्ध होता है।

आयुर्वेद मतानुसार मधुमेह २० प्रकार का होता है। वातज-४, कफज-१०, पित्तज-६ प्रकार का होता हैं। सभी प्रकार के मधुमेह में एक परीक्षित एवं अनुभूत अनुसंधानित नुस्खा दिया जा रहा है। अभ्रक भस्म १ रत्ती, कांत लौह भस्म १ रत्ती, शिलाजीत तरल २ रत्ती, बसंत कुसुमाकर रस १२५ मिलीग्राम मिलाकर सुबह-शाम नियमित रूप से सेवन करें। यह अनुसंधानित परीक्षित अचूक रामबाण नुस्खा है। इसके सेवन से मधुमेह नियंत्रित रहता है इसे नियमित रूप से सेवन करें।

❑❑❑

साभार- निरोगधाम

कहानी दयानन्द की

कथा सरित

स्वामी दयानन्द की जीवन गाथा के साथ जैसे जैसे हम आगे बढ़ते हैं अनेक अवसरों पर उनके सिद्धान्त, समस्याओं का उनकी दृष्टि में समाधान सहज ही उपस्थित हो जाते हैं। उन पर ध्यान पूर्वक विचार करने से कई कठिन स्थलों का सहज उत्तर मिल जाता है।

कितने आश्चर्य की बात है कि इस इक्कीसवीं सदी में भी तथाकथित धर्माचार्य वेद का नाम लेकर स्त्रियों को गायत्री पढ़ने का निषेध करते हैं। परन्तु १९वीं सदी के मध्य भाग में दयानन्द सिर्फ उपदेश ही नहीं करते, ठकुरानी हंसा को गायत्री जप का निर्देश देते हैं। ठाकुर गोपाल सिंह की ताई ६० वर्षीय वृद्ध बाल विधवा हंसा ठकुरानी जो कि ५-६ ग्रामों की स्वामिनी थी, ने श्री महाराज से पूछा कि उसका कल्याण कैसे हो? महाराज ने उनको गायत्री का उपदेश दिया और ठाकुर पूजा का व्यर्थ का आडम्बर त्याग 'ओ३म्' के जप का उपदेश दिया। यह उस समय की एक क्रान्तिकारी एवं अभूतपूर्व घटना थी।

स्वामी जी अपनी योगसाधना व अन्तिम लक्ष्य की चिन्ता न करके इस देश को समस्त कुरीतियों से मुक्त करके विश्वगुरु के स्थान पर पुनः अभिषिक्त करने के लिए प्राण-प्रण से प्रयत्न कर रहे थे। इस मार्ग में उन्हें पदे-पदे क्या कुछ न सहना पड़ा। यहाँ तक कि उनके प्राण हरण के प्रयास भी किये गए परन्तु वे बिना विचलित हुए अपने निश्चय पर अडिग रहे। लोगों को आश्चर्य होता था कि आखिर क्यों यह संन्यासी इस पचड़े में पड़ा है। एक लाला इन्द्रमणि थे। उन्होंने जब यही प्रश्न स्वामी जी से किया कि आप इस झगड़े में

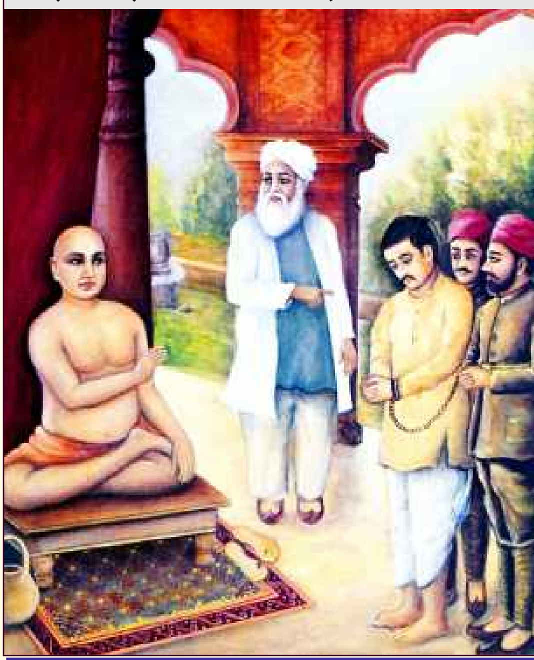

क्यों पड़ गए, तो स्वामी जी ने जो उत्तर दिया वह ध्यान में रखने योग्य है। स्वामी जी ने कहा- 'मेरे लिए यह कार्य झगड़ा नहीं है किन्तु ऋषि-ऋण का उतारना है स्वार्थी लोग इस समय ऋषि-सन्तान को कुमार्ग पर चलाकर, उसे कुरीतियों के नुकीले काँटों पर घसीट कर छलनी बना रहे हैं। मुझसे आर्य सन्तान की यह दीन दुर्दशा देखी नहीं जाती। मैंने प्रण कर लिया है कि इसे सन्मार्ग पर लाने का प्राण-प्रण से प्रयत्न करूँगा।' पिता के अतुल्य वैभव को त्याग कर यह युवा संन्यासी राष्ट्र के कल्याण के लिए दृढ निश्चय के साथ समुद्यत है। धन्य है यह राष्ट्र। उनको जितना नमन करें वह न्यून ही है।

स्थिति यह थी कि महर्षि दयानन्द सत्य कथन से पीछे नहीं हटते थे और लोग जो उनके सत्य कथन को अपने व्यवसाय पर, अपनी मान्यताओं पर चोट मानते थे और

उन पर तर्क पूर्वक विचार करने को तैयार नहीं थे, वे स्वामी जी के अपकार के लिए सन्नद्ध रहते थे। यहाँ तक कि उनके प्राण हरण की चेष्टा भी करते रहते थे। अनूप शहर में एक ऐसे ही व्यक्ति ने स्वामी जी को पान में विष मिलाकर दे दिया। स्वामी जी तुरन्त जान गए कि उसमें विष मिला हुआ है। उन्होंने उस आदमी को कुछ नहीं कहा और गंगा पार जाकर के नेति धौती बस्ती आदि यौगिक क्रियाएँ करके विष के प्रभाव को समाप्त कर दिया। इधर अनूप शहर के जो तहसीलदार सैयद मोहम्मद जी थे वे स्वामी जी के प्रति अपार श्रद्धा रखते थे, उन्होंने उस व्यक्ति को कैद कर लिया। वे मन ही मन बड़े प्रसन्न थे कि आज स्वामी जी उनको शाबाशी देंगे क्योंकि उनके प्राण हरण की चेष्टा करने वाले को मैंने गिरफ्तार कर लिया है। परन्तु जब वे स्वामी जी के पास पहुँचे तो ऐसा कुछ नहीं हुआ बल्कि स्वामी जी किंचित रुष्ट हुए और स्पष्ट रूप से कहा कि 'मैं लोगों को कैद में डलवाने नहीं बल्कि उनको कैद से छुड़वाने आया हूं। दुष्ट अगर अपनी दुष्टता नहीं छोड़ते तो हम अपनी श्रेष्ठता क्यों छोड़ें?' अपने प्राणों को हरने की चेष्टा करने वाले के प्रति ऐसे दयालुता से परिपूर्ण वचन किसी महान् आत्मा के ही हो सकते हैं।

प्रस्तुति- नवनीत आर्य
नवलखा महल, उदयपुर

सड़क किनारे हाइवे पर मिली उदयपुर की डाक, विभाग की लापरवाही उजागर

उदयपुरः फलासिया क्षेत्रीय वन अधिकारी कार्यालय के समीप हाइवे किनारे कुछ युवाओं को ५०० से अधिक पोस्ट ऑफिस की डाक मिली है। मौके से युवाओं ने कुछ दस्तावेजों को लेकर फलासिया पुलिस को सौंपे है। फलासिया थाना पुलिस ने इन सरकारी दस्तावेजों को जब्त किया है वहीं कुछ दस्तावेज अभी भी मौके पर पड़े हैं। जानकारी के अनुसार फलासिया हाइवे पर पड़े मिले ये सभी दस्तावेज गिर्वा पंचायत समिति क्षेत्र के हैं। हिरणमगरी, हरिदास जी की मगरी, मल्लातलाई, ८० फीट रोड, सज्जन नगर, हर्ष नगर, रामपुरा क्षेत्र के हैं। इन दस्तावेजों में अधिकतर ग्रामीणों का आधार कार्ड जिन पर पता शास्त्री

सर्कल पोस्ट ऑफिस दर्ज है, इसके अलावा बैंक पासबुक, चेक बुक, वाहनों की आरसी बुक, वाहनों की एनओसी, अकाउण्ट सम्बन्धित दस्तावेज प्रमुख हैं। बड़ा सवाल ये है कि इतनी मात्रा में उदयपुर क्षेत्र के ये दस्तावेज ८० किमी दूर फलासिया हाइवे के समीप झाड़ियों तक कैसे पहुँचे जिम्मेदारों को सन्देह के घेरे में खड़ा करता है। जिन लोगों के घर तक ये दस्तावेज पहुँचने थे वो उनके घर के बजाए सड़कों पर पड़े है। ऐसे में ग्रामीणों ने आक्रोश व्यक्त किया है।

नोट : सत्यार्थ सौरभ के अनेक सदस्यों की शिकायत हमें प्राप्त होती है कि उन्हें पत्रिका नहीं मिली। इसी प्रकार यह न्यास भी 23 पत्रिकाओं का ग्राहक है। जबकि 3–4 ही प्राप्त होती है। क्या पता सत्यार्थ सौरभ तथा अन्य पत्रिकाओं के साथ भी ऐसी ही होता हो।

समाचार

नवसंवत्सर पर विश्व की प्रथम मानव पीढ़ी का जन्म हुआ

आर्य समाज, हिरण मगरी; उदयपुर की ओर से ६ अप्रैल २०२४ को नवसंवत्सर एवं आर्य समाज स्थापना दिवस पर आयोजित धर्म सभा को सम्बोधित करते हुए सत्यार्थ प्रकाश न्यास के अध्यक्ष श्री अशोक आर्य ने कहा कि आज का दिन मानव जाति के लिए महत्व का दिन है। आज ही के दिन विश्व के प्रथम मानव का जन्म हुआ। सृष्टि की उत्पत्ति के बाद परमात्मा ने आज ही के दिन वेद का ज्ञान दिया, इसलिए यह वेद संवत्सर भी है। आज ही के दिन महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना कर वेद मंत्र 'कृण्वन्तो

विश्वमार्यम्' को अग्रसर किया। आर्य का अर्थ आर्य समाजी होना ही नहीं किन्तु भद्र होना है। विश्व के प्रत्येक मनुष्य को श्रेष्ठ बनने की बात कही है। संसार के सभी मनुष्यों के अवगुण दूर हों। अवगुण दूर होंगे तभी तो सद्गुण आयेंगे। सद्गुणों के धारण से ही मनुष्य का कल्याण है। इस अवसर पर श्रीमती उगंता यादव, सुभाष कोठारी ने नववर्ष एवं आर्य समाज सम्बन्धी गीत भजन प्रस्तुत किए। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती ललिता मेहरा ने किया। आर्य समाज के प्रधान भंवर लाल आर्य ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

इससे पूर्व इन्द्र प्रकाश यादव के पौरोहित्य में विशेष यज्ञ सम्पन्न हुआ। बलराम चौहान, नूतन, प्रीति चौहान, चन्द्रकला आर्या, श्रवण वधवा, चन्द्र कला राठौड़, प्रतिभा सिसोदिया, अम्बालाल सनाढ्य आदि ने यजमान बन कर यज्ञ में आहुतियाँ दीं। प्रातः हिरणमगरी क्षेत्र में डॉ. अमृत लाल तापड़िया के संयोजन में प्रभात फेरी निकाली गयी। उदयपुर सर्वसमाज द्वारा आयोजित धार्मिक झाँकियों में आर्य समाज हिरणमगरी की ओर से श्रीमती सरला गुप्ता एवं राजकुमार गुप्ता के संयोजन में हवन करते हुए एवं वैदिक ग्रन्थों की झांकियाँ सम्मिलित हुईं।

- रामदयाल मेहरा

सेवानिवृत वरिष्ठ कृषि वैज्ञानिक समूह की ११८वीं द्विमासिक बैठक व होली स्नेह मिलन समारोह नवलखा महल में आयोजित

सेवानिवृत वरिष्ठ कृषि वैज्ञानिक समूह की ११८वीं द्विमासिक बैठक व होली स्नेह मिलन समारोह नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र, उदयपुर में २८ मार्च २०२४ को आयोजित हुआ। महल का अवलोकन कराते हुए श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के अध्यक्ष अशोक आर्य ने बताया कि १० अगस्त १८८२ को मेवाड़ के महाराणा सज्जन सिंह के अनुरोध पर महर्षि दयानन्द सरस्वती उदयपुर पधारे व नवलखा महल (महाराणा का शाही अतिथि गृह) में २७ फरवरी, १८८३ तक यानी लगभग साढ़े छह महीने प्रवास किया। पवित्र नवलखा महल में महर्षि दयानन्द ने युग प्रवर्तक ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के लेखन को पूरा किया। आजादी के बाद नवलखा महल राज्य सरकार के अधीन रहा व सन्

१९९२ में उसे सत्यार्थ प्रकाश न्यास को सौंप दिया गया। तब से इसे निरन्तर विकसित करते हुए अन्तर्राष्ट्रीय स्तर का केन्द्र बनाने के प्रयास जारी हैं। सभी सदस्य वैदिक ऋषि, वेद मंत्र आधारित बाह्य भित्तिका दृश्यावली, प्रेरणा कक्ष में भारत के ख्यातनाम विभूतियों के चित्र, पंच महायज्ञ, आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा, सत्यार्थ प्रकाश पर आधारित शिक्षाओं को दर्शाता घूमता हुआ ग्लास टावर, १६ संस्कार दीर्घा, ३डी थिएटर में फिल्म आदि देखकर अभिभूत हुए। नवलखा महल के माता लीलावन्ती सभागार में फरवरी व मार्च में जन्मे सदस्यों का जन्मदिन व विवाह वर्षगाँठ मना मंत्रोच्चारण द्वारा उनके सुदीर्घ जीवन की मनोकामना की गई।

- डॉ. अमृतलाल तापड़िया, संयुक्त मंत्री-न्यास

राष्ट्र निर्माण के स्वर्णिम सूत्र विषय पर कार्यशाला सम्पन्न

दिनांक २१ अप्रैल २०२४ को सायंकाल ४:०० बजे से नवलखा महल; उदयपुर में उक्त विषय पर एक कार्यशाला आयोजित की गई। जिसमें आर्य भाई-बहिनों के अतिरिक्त राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के क्षेत्रीय

प्रचारक प्रमुख माननीय श्रीवर्द्धन जी भी उपस्थित थे। कार्यशाला में न्यास के अध्यक्ष श्री अशोक आर्य ने महर्षि दयानन्द के मन्तव्यों को प्रस्तुत करते हुए राष्ट्र निर्माण के लिए सर्वोपरि प्रयास करने की आवश्यकता को उकेरित किया, वहीं माननीय श्रीवर्द्धन जी ने वर्त्तमान समय में राष्ट्र के समक्ष जो चुनौतियाँ हैं उनको प्रस्तुत करते हुए उनके समाधान हेतु समस्त नागरिकों को आगे आने का आह्वान किया और दायित्व बोध भी कराया। इससे पूर्व मुख्य अतिथि का स्वागत न्यास मंत्री श्री भवानी दास आर्य ने और आर्य समाज पिछोली के प्रधान श्री प्रकाश श्रीमाली ने ओम दुपट्टा और पगड़ी पहनाकर के किया। वहीं न्यास के संयुक्त मंत्री डॉ. अमृतलाल तापड़िया ने कार्यक्रम के पश्चात् सभी को धन्यवाद ज्ञापित किया।

- भवानीदास आर्य; मंत्री-न्यास

हलचल

आर्य समाज; सज्जन नगर का वार्षिक अधिवेशन एवं कार्यकारिणी चुनाव सम्पन्न

दिनांक ०७ अप्रैल, २०२४ रविवार को आर्य समाज; सज्जन नगर का वार्षिक अधिवेशन एवं कार्यकारिणी चुनाव यज्ञ सत्संग के पश्चात् सम्पन्न हुए। कार्यक्रम का संचालन मंत्री श्री हेमांग जोशी ने किया। निर्वाचन अधिकारी श्री मयंक राजसोनी जी, असिस्टेंट वाइस प्रेसिडेंट; इन्डसइन्ड बैंक, उदयपुर के सान्निध्य में सम्पन्न हुए। निर्वाचनों में निम्नलिखित पदाधिकारी एवं अंतरंग चुने गए।

संस्थापक/संरक्षक- श्री हुकमचन्द शास्त्री, अध्यक्ष- श्री देवीलाल गर्ग, सचिव- श्री हेमांग जोशी, कोषाध्यक्ष- श्रीमती दीपिका पंड्या।

सभी पदाधिकारियों को अनेकशः शुभकामनाएँ।

आर्य कन्या गुरुकुल का उत्सव सम्पन्न

मंगलवार १६ अप्रैल २०२४, आर्य कन्या गुरुकुल; न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव संपन्न हुआ। वैदिक विदुषी पद्मश्री आचार्या सुकामा जी ने यज्ञ करवाया। कार्यक्रम की अध्यक्षता आर्य नेता सत्यानन्द आर्य जी ने की।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि कन्याओं के निर्माण से उज्जवल राष्ट्र का निर्माण होता है और समाज की नींव मजबूत होती है। उन्होंने आश्रम की संचालिका साध्वी

उत्तमायति जी को भारत सरकार द्वारा पद्मश्री से सम्मानित करने की मांग की।

डॉ. वाचस्पति जी, डॉ. जयेन्द्र आचार्य, आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, डॉ. आयुशी राणा, आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री, सुश्री कंचन आर्या आदि ने भी अपने विचार रखें। दिल्ली प्रान्तीय आर्य महिला सभा की प्रधान साध्वी उत्तमायति जी ने धन्यवाद ज्ञापन किया व आर्य नेत्री आरती खुराना ने कुशल संचालन किया।

प्रमुख रूप से आर्य नेता सुरेन्द्र कुमार आजमानी, यशपाल आर्य, महेन्द्र भाई, प्रकाश कथूरिया, रेणु त्यागी, पूजा सूरी, उषा सरीन, अनिता आर्य, नीरज कुमारी, डालेश त्यागी, कविता आर्य, वरुणेन्द्र कथूरिया आदि उपस्थित थे। आर्य कन्या गुरुकुल की बालिकाओं ने रोचक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

- परवीन आर्य, मीडिया प्रभारी

दयानन्द कन्या विद्यालय का वार्षिक उत्सव सम्पन्न

आर्य समाज हिरण मगरी; उदयपुर द्वारा संचालित दयानन्द कन्या विद्यालय का वार्षिक उत्सव २० अप्रैल, २०२४ को बालिकाओं द्वारा प्रस्तुत रगारंग कार्यक्रम के साथ सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि सरिता गुप्ता ने इस अवसर पर अपने सम्बोधन में कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती एवं आर्य समाज ने नारी शिक्षा एवं नारी उत्थान के लिए जो काम किया उसे हमेशा याद किया जाता रहेगा। विशिष्ट अतिथि कवि गिरीश जोशी ने कहा कि दयानन्द कन्या विद्यालय में शिक्षा के साथ विद्या भी दी जाती है। प्रारम्भ में डॉ.अमृत लाल तापड़िया ने स्वागत किया। विद्यालय की मानद निदेशक पुष्पा सिन्धी ने विद्यालय की वार्षिक गतिविधियों पर प्रकाश डाला। डॉ. भँवर लाल पोरवाल, शिखा कुलश्रेष्ठ, भँवर लाल आर्य, डॉ. वेदमित्र आर्य, रमेशचन्द्र जायसवाल, ,अम्बालाल सनाढ्य, सुभाष कोठारी, इन्द्र प्रकाश यादव आदि की सार्थक उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती ललिता मेहरा ने किया। मंत्री कृष्ण कुमार सोनी ने आभार व्यक्त किया।

इस अवसर पर बालिकाओं द्वारा तैयार समूह नृत्य, समूह नाटिका बेटी बचाओ व कैसे बदला दयानन्द सरस्वती का जीवन की भावपूर्ण प्रस्तुति दी गयी।

- रामदयाल मेहरा; प्रचार मंत्री

आर्य समाज; हिरण्रमगरी, उदयपुर के निर्वाचन सम्पन्न

निर्वाचन अधिकारी श्रीमान् प्रकाश जी श्रीमाली की अध्यक्षता में आर्य

समाज; हिरणमगरी के चुनाव दिनांक २१ अप्रैल २०२४ को सम्पन्न हुए। जिसमें निम्न पदाधिकारी चुने गए।

भँवर लाल आर्य- प्रधान एवं वेदमित्र आर्य-मंत्री, कृष्ण कुमार सोनी, ललिता मेहरा-उप प्रधान, सरला गुप्ता, सुभाष कोठारी-उप मंत्री, रमेशचन्द्र जायसवाल-कोषाध्यक्ष, रामदयाल मेहरा-प्रचार मंत्री एवं दिनेश अग्रवाल-पुस्तकालयाध्यक्ष। अंतरंग (कार्यकारिणी) सदस्यों में डॉ. अमृत लाल तापड़िया, डॉ. शारदा गुप्ता, हजारी लाल आर्य, देवेन्द्र आर्य, चन्द्रकला यादव बनाये गये। लेखा निरीक्षक अम्बालाल सनाढ्य।

- रामदयाल मेहरा-प्रचार मंत्री

आर्य जगत् का एक और दीपक बुझ गया

अत्यन्त दुःखद समाचार संज्ञान में आया कि आर्य समाज, नागौरी गेट, हिसार के आधार स्तम्भ श्री हरिसिंह जी सैनी का निधन हो गया।

आदरणीय हरिसिंह जी आर्य समाज, नागौरी गेट, हिसार के आधार स्तम्भ तो थे, वे सम्पूर्ण आर्य जगत् में जाने-माने चर्चित व्यक्ति भी थे। आर्य जगत् की अनेकों संस्थाओं के उन्नयन में पूज्य बाबूजी का हाथ था। वे उदारमना, दानवीर भामाशाह थे। यह न्यास भी उनके स्नेह की छाँव में रहा है। उनके यूँ चले जाने से आर्य समाज, हिसार को ही नहीं वरन् मुझे व्यक्तिशः एवं सम्पूर्ण आर्य समाज को गहरी क्षति हुई है।

इस दुःख की घड़ी में श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के सभी न्यासी बन्धु एवं सत्यार्थ सौरभ परिवार के सभी सदस्यगण सहभागी हैं। हम हार्दिक संवेदना प्रकट करते हुए परमपिता परमात्मा के श्री चरणों में विनय करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को अपनी आनन्दमयी गोद में स्थान प्रदान करें और परिवारिजनों को वह शक्ति प्रदान करें कि वे इस दारुण दुःख को सहन कर सकें। इन्हीं भावनाओं के साथ दिवंगत आत्मा के प्रति श्रद्धांजलि प्रकट करते हैं।

- अशोक आर्य, सम्पादक-सत्यार्थ सौरभ

Dollar
Bigboss
PREMIUM INNERWEAR
Fit Hai Boss
www.dollarglobal.in | Buy Online: www.dollarshoppe.in | Also available at
Dollar products are available in over 800 cities/towns and 100,000 MBOs across India | Govt. Certified STAR EXPORT HOUSE

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 May-2024 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2021-2023

यदि एक अकेला सब वेदों का जाननेहारा, द्विजों में उत्तम संन्यासी जिस धर्म की व्यवस्था करे, वही श्रेष्ठ धर्म है। क्योंकि अज्ञानियों के सहस्रों, लाखों, क्रोड़ों मिलके जो कुछ व्यवस्था करें, उसको कभी न मानना चाहिये।

- षष्ठ समुल्लास पृष्ठ १४४

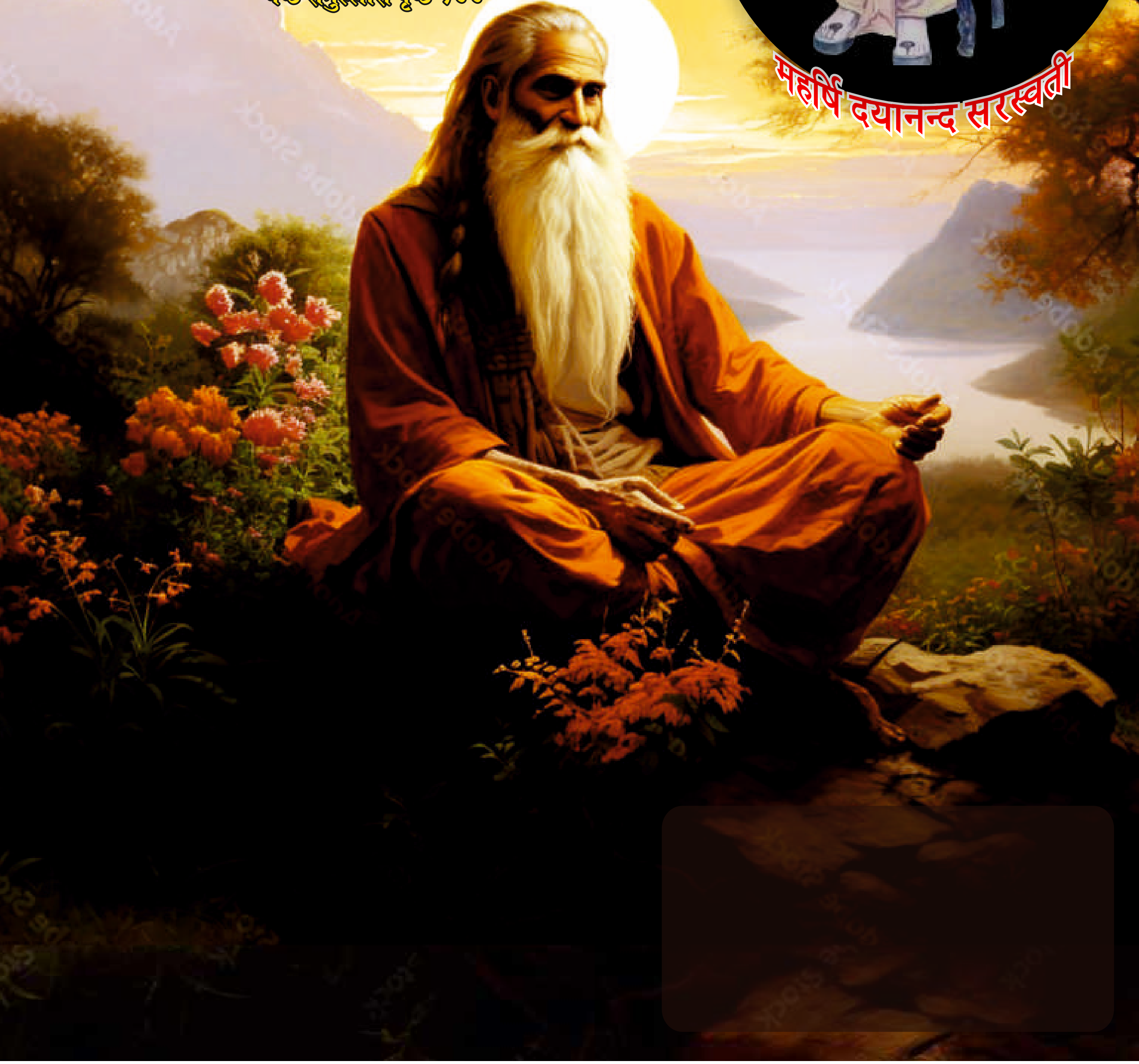

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा निदेशक- मुकेश चौधरी, चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख | प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख | प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर